धन्यवाद



हमें यह निवेदन करते हुए परम हर्ष होता है, कि बीकानेर निवासी स्वर्गीय सेठ श्रीयुत भैरोंदानजी डागा की धर्मपत्नी एव श्रीयुत मगनमलजी दीपचदजी सेठिया की सुपुत्री श्रीमती माणकबाई ने स्व० साध्वीजी श्री सत्य श्रीजी महाराज की शिष्या श्रीमती तेजश्रीजी महाराज की विदुषी शिष्या श्रीमती भक्तिश्रीजी मुक्तिश्रीजी के सदुपदेश से इस पुस्तक के प्रकाशन में आर्थिक सहायता प्रदान की है। अतः आप धन्यवाद के पात्र हैं।

निवेदक
श्री जिन हरिसागर सूरी जैन ज्ञानभंडार
मत्री इद्रचद मेघराज पारख
जाटावास (लोहावट मारवाड़)

श्रीसुखसागर जैन ज्ञान बिन्दु नं०-४८

अर्हँ नमः

वर्षीतप-छहमासीतप-उपधानतप वीसस्थानकतप के

चैत्यवदन-स्तवन-स्तुति संग्रह रूप

तपो विधि दूसरा भाग

प्रकाशक

श्री जिन हरिसागरसूरि जैन ज्ञान भडार

मु० लोहावट (मारवाड)

मूल्य

मुद्रक—जैन प्रेस, कोटा (राजपूताना)

दो शब्द

—=०=—

वर्षीतप छहमासीतप उपधानतप एवं वीस स्थानक तप के करने वाले भाविक भक्तों के सुभीते के लिये पूज्येश्वर जैनाचार्य श्रीश्री१००८ श्रीमज्जिन हरिसागर सूरीश्वरजी महाराज साहब ने उस २ तप के चैत्यवंदन स्तवन स्तुति आदि संकलित करके बड़ा उपकार किया है।

उस २ तप के करने वाले महानुभाव इससे लाभ उठावें एवं आध्यात्मिक प्रगति को करते हुए परमात्म पद का लाभ प्राप्त करें यही अभिलाषा करता हूँ।

हितैषी
मुनि हेमेन्द्र सागर
जेसलमेर (राजपूताना)

* ॐ अर्हं नम *

॥ श्रीसुखसागर-भगवज्जिनहरि पूज्यपरमगुरुभ्यो नमो नमः ॥

—— ० ——

पूज्यपाद-पूज्येश्वर-प्रात स्मरणीय-सुगृहीत नाम-
धेय सर्वतन्त्र स्वतन्त्र आबालब्रह्मचारि-श्रीसुविहित
खरतरगच्छाधिराज श्रीश्री १००८ श्रीम
जिनहरिसागर सूरीश्वर विरचित

वर्षीतप-

चैत्यवन्दन-स्तवन-स्तुति संग्रहः।

——]○[——

चैत्यवन्दन—१ ।

(द्रुतविलम्बितम्)

१

विमल-बोध-विधान-विधायको,
युगल-जात-तमोपहर, प्रभु ।
सकलभारविभारिसुधामसान,
हरिनतो जयताज्जयताच्चिरम् ॥

२

अतुल-भीमभवोदधितारक,
सबल-साधन-भावसुधारक ।
जटिल-मोह-महोदय-हारको,
हरिनतो जयताज्जयताच्चिरम् ॥

३

विपुल-वार्षिक-दिव्यतपोविधौ,
तरलतारहितात्मविवेकवान् ।
अकल एक युगादिजिनेश्वरो,
हरिनतो जयताज्जयताच्चिरम् ॥

चैत्यवन्दन—२ ।

(तोटक छन्द)

१

निज पूर्व किये सब कर्म महा
बलवान विरोधि- परानयको ।
प्रभु आदि अचचल भावभरे,
तप वार्षिक हर्षित हो करते ॥

२

प्रभु का तप तेज अहो कितना,
निर्बं को परको सुखदायक था ।

कृत कर्मकटे सबभर्म मिटे,
परमातमता–गुण भी प्रकटे ॥

३

धन भाग्य किये जिनने प्रभु के,
शुभ दर्शन दर्शन–पावन हो ।
सुखसागर वे भगवान बने,
हरिपूज्य हुए जय हो जय हो ।

चैत्यवन्दन—३ ।

(हरिगीत छन्द)

१

श्रीसुखम दुखमा नाम आरा अन्तमे जो अवतरे,
भारत अकर्मक भावको हर कर्मपथ जो थिर करे ।
नर नारियों मे पुण्यतम कर्त्तव्य बोधविधायक,
त नौमि हरिपूज्य पर श्रीमद्दषभ जिननायकम् ॥

२

समार के सब भोग भारी-रोग जैसे जान कर,
साम्राज्य को रजपुज जैसे तज धरें सयम-प्रवर ।
जग जीवगण को आत्म-जीवन ज्योति पावनदायक
त नौमि हरिपूज्य पर श्रीमद्दषभजिननायकम् ॥

३

कृत दुष्कृतों को दूर करने के लिये उपशान्तिमय,
जो घोरतर तप वर्षभर कर पागये अनुपम विजय।
श्रीनाभिनृप मरुदेवीनन्दन कीर्तिगायन-लायक,
त नौमि हरिपूज्य पर श्रीपद्मप्रभ-जिननायकम् ॥

चैत्यवन्दन—४।

(शार्दूलविक्रीडितम्)

१

श्रीमन्नाभिकुलाम्बराम्बरमणिश्चिन्तामणिश्चिन्तिते,
ऽर्थे योगीन्द्र किरीटनायकमणि कर्त्तव्यमार्गाग्रणीः।
सद्बोधैरसुधार्णवोगुणगणी कल्याणमालामणी,
स वर्पाद् हरिपूज्य-पुण्यपदभागादौ युगग्रामणी ॥

२

भिक्षानिष्यनभिज्ञभक्तजनतानीते महोपायने,
कन्या रत्न-हयेभ वस्तुविषये नित्य ह्युपेक्षापर।
दीक्षानन्तरमन्तरायवशतश्चैकेतपो वार्षिक
य सोऽस्य हरिपूज्य पुण्यपदवि० पायादपायात्प्रभु ॥

३

जाति-स्मृत्युपलक्षिताय विधिवत्सन्न्येक्षुभूयोरस,
श्रेयांसेन विहारितो भगवते भव्यात्मना भावत।

देवैः पञ्च-सुदिव्यदिव्यमहिमाऽकारीति धन्ये क्षणे,
धन्यास्ते हरिपूज्यपुण्य महिता येऽस्य· फल लम्भिता ॥

चैत्यवन्दन—५ ।

दूहा—

ॐ अर्ह आदिप्रभु-युगआदिस्थितिकार ।
कर्म अनादि दूर कर-वदू वार हजार ॥ १ ॥
निज जीवन अदर्श से-जगजीवन उपकार ।
कर्ता हे प्रभु आपको-वदू वार हजार ॥ २ ॥
अतराय आश्रव सभी-सेवू मे हर वार ।
जीवन मे पलटा करो-वदू वार हजार ॥ ३ ॥
पूरव कृत निज कर्म को-भोगें आप उदार ।
मेरी क्या औकात बस-वदू वार हजार ॥ ४ ॥
वर्षीतप कर आपने-किया कर्म सहार ।
वह बल मुझको दीजिये-वदू वार हजार ॥ ५ ॥
सुखसागर भगवान हे-आदीश्वर अवतार ।
शरणागत रक्षा करो-वदू वार हजार ॥ ६ ॥
हरि पूज्येश्वर आप हैं-मेरे तो आधार ।
मनसा वचसा कर्मणा-वदू वार हजार ॥ ७ ॥

स्तवन—१ ।

(तर्ज—तेरे पूजन को भगवान बना मनमंदिर आलीशान ।

जय जय आदीश्वर भगवान
अगमगुणि ज्ञानी दया निधान ॥ टेर ॥

प्रभुने युगलाधर्म निवारा, करम युग पावन खूब प्रचारा ।
सदा जग भव्य-कला विज्ञान, हुआ फिर जीवन का कल्यान ॥
जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ १ ॥

विनीता नगरी राज्यजमाया, भोगा पूरव पुण्य कमाया ।
छोडा अरे अथिर सब जान, संयम साधा पुण्यप्रधान ॥
जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ २ ॥

जगत की जनता मस्तक नमाय, करती सविनय भाव प्रणाम ।
न जाने भिक्षा विधि विधान, इसी में था संकेत महान् ॥
जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ ३ ॥

पूरव भव का था यह पाप, बैल मुख छींका बाधा आप ।
उसी से जाना विघन निदान, महा प्रभु क्षमावली बलवान ॥
जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ ४ ॥

कन्या हय गय रथ मणिलावें, लोक प्रभुको भेंट चढावें ।
पर प्रभु धरें न उनपर ध्यान, विधियुत चाहें भिक्षादान ॥
जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ ५ ॥

वरस यों बीता विन आहार, जय जय जिनवर जगदाधार।
बने रहे अचल सुमेरु महान्, तभी तो पाये पूजा स्थान॥
जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ ६ ॥

श्रीश्रेयास कुमर अवलोके, जाती समरण भान अशोके।
प्रभु के उचित सुभिक्षा दान, जाना, होगया हर्षित प्रान॥
जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ ७ ॥

प्रभु के अंतराय का योग, टूटा प्रकटा धन्य सुयोग।
इक्षु रस वर अमृत-पान, करावें श्रीश्रेयास महान॥
जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ ८ ॥

प्रकटे पंच दिव्य अभिराम, काटे प्रभुने कर्म तमाम।
धन्य वह समय धन्य अवधान, धन जो पाये दर्शन दान॥
जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ ९ ॥

परव वह अखा तीज शुभनाम, आराधक अक्षय गुणधाम।
होते सुखसागर भगवान, वर्षीतप करके अनिदान॥
जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ १० ॥

समाधि विधियुत तपको धार, भविजन भवजल करते पार।
करें 'हरि' उनका नित गुणगान, जय जय आदीश्वर भगवान॥
जय जय आदीश्वर भगवान० ॥ ११ ॥



स्तवन—२ ।

(तर्ज—गोपीचन्द लड़का बादल बरसे रे कचन महेल में)

आदीश्वर स्वामी नामी बल ऐसा हम को दीजियें
तप सफल करें हम ऐसा बल कृपया हमको दीजियें ॥ टेर ।

पूरब भव कृत अन्तराय जो, वर्षीतप कर तोड़ा ।
हम भी वैसे ही कर पावें, अड़े न आड़ा रोड़ा रे ॥
आदीश्वर स्वामी० ॥ १ ॥

अतराय से मन की इच्छा, मनमें नाथ समावे ।
कूप की छाया कूप समावे, कोई काम न आवे रे ॥
आदीश्वर स्वामी० ॥ २ ॥

हम अज्ञानी अतराय के, आश्रव सारे सेवें ।
भवसागर मझधार नाथ हम, नाव दयाकर खेवें रे ॥
आदीश्वर स्वामी० ॥ ३ ॥

हँस हँस बाधे कर्म अनेकों, नहीं विवेक धरावें ।
रोते रोते भोग रहे हम, किसको नाथ सुनावें रे ॥
आदीश्वर स्वामी० ॥ ४ ॥

सयम शक्ति रही न हममें, कोरी बात बनावें ।
कागज की नैया पर बैठे, कैसे पार लगावें रे ॥
आदीश्वर स्वामी० ॥ ५ ॥

ऐब दूसरों के हम देखें, अपना करें न लेखा।
डुंगर बलता देख रहे पर, पग बलता नहीं देखा रे॥
आदीश्वर स्वामी० ॥ ६ ॥

धन्य धन्य प्रभु धन्य आपने, अपना रूप निपाया।
परमातम पद को प्रकटा कर, परमानंद बढ़ाया रे॥
आदीश्वर स्वामी० ॥ ७ ॥

नाभि नृप मरुदेवा नंदन, जय जय हे अविकारी।
वर्षीतप कर कर्म खपाये, जावें हम बलिहारी रे॥
आदीश्वर स्वामी० ॥ ८ ॥

धन हथिणाउर पावन भूमि, धन श्रेयांस कुमार।
धन इक्षुरस पान किया प्रभु, धन दिन पर्व उदारा रे॥
आदीश्वर स्वामी० ॥ ९ ॥

चैतवदी आठम से लेकर, सुद वैशाखी तीजे।
वर्षाधिक तप किया पारणा, शान्त सुधारस भींजे रे।
आदीश्वर स्वामी० ॥ १० ॥

सुखसागर भगवान तुम्ही हो, प्रभु हरिपूज्य हमारे।
जीवनमें बल बुद्धि भरदो, गावें जय जय कारे रे॥
आदीश्वर स्वामी० ॥ ११ ॥

स्तवन—३ ।

(तर्ज—शुद्ध सुंदर अति मनोहर मोरुदेवे मातर)

आदि जिनवरजी अनादि, कर्ममल हर लीजियें ।
दास हूं अरदास मेरी, ध्यान में धर लीजियें ॥ टेर ॥
तीसरा आरा प्रभु वह था, अकर्मक भाव म ।
कर्मयुग तब था दिखाया, अब भी दिखला दीजियें । आ० ॥१॥
आपने नर नारियों को, मोक्ष की दी थी कला ।
नाथ अब वैसी कला का, दान दयया कीजियें । आ० ॥२॥
राजनीति धर्मनीति, के प्रवर्तक आप हैं ।
है अनीति जा रही घम दूर उसको कीजियें । आ० ॥ ३ ॥
राज को रजपुञ्ज माना, भोग माने रोग से ।
त्याग का वह पाठ पावन, नाथ सिखला दीजियें । आ० ॥४॥
वर्षभर रहकर निराहारी, करम तोड़े प्रभु ! ।
वह सफल तप कर सकू, यह शक्ति प्रभु द दीजियें । आ० ॥५॥
हाथि हय-कन्या रतन मणि क, प्रलोभन आपको ।
ये चला न सके अचलता, नाथ मुझको दीजिये । आ० ॥६॥
भक्त वर श्रेयास से ले, इक्षुरस पारन किया ।
वैसी भक्ति कर सकू, वैसा समय प्रभु दीजियें । आ० ॥७॥
की तपस्या म क्षमा थी आपने अनुपम प्रभो ! ।
उस क्षमा की साधना को आज सिखला दीजियें । आ० ॥८॥
ज्ञान केवल आपने पाया स्वमाता को दिया ।

शुद्ध उसके अशका कुछ दान दाता कीजियें। आ० ॥९॥
आप सुखसागर प्रभु भगवान हैं संसार में।
नाथ निज पद भक्ति के अधिकार को कुछ दीजिये। आ० ॥१०॥
हे प्रभो हरिपूज्य गुण गाया करूं नित आपका।
बुद्धिबल वह दीजियें इस विनति को सुन लीजियें। आ० ॥११॥



स्तवन—४।

(तर्ज—तुम को लाखों प्रणाम)

आदीश्वर अवतारी तुम को लाखों प्रणाम।
ऋषभ प्रभु जयकारी तुम को लाखों प्रणाम॥ टेर॥
नाभि नृप मरुदेवी नदा, इक्ष्वाकु कुल कमल दिणदा।
युगलाधर्म निवारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥१॥
कोशल देश विनीता पावन, जनता में डाला नव जीवन।
आदि युग उपकारी, तुम को लाखो प्रणाम आ० ॥२॥
चौसठ बहुतर कला सिखाई, सुखमय जीवन रीति दिखाई।
पुण्य कला बलिहारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥३॥
वीस लाख पूरब तक स्वामी, रहे कुमार पदे अभिरामी।
धन जीवन अविकारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥४॥
तेसठ लाख पूरवतक राजा, रहे जगत के प्रभु सिरताजा।
राज नीति विस्तारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥५॥

भरतादिक सौ सुत बडवीरा, गुण में सागर सम गंभीरा।
तद्भव शिव संचारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ६ ॥
ब्राह्मी सुंदरी सुता सती थी, शील महाव्रत पुण्यवती थीं।
नाम लिया निस्तारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ७ ॥
अनासक्त भोगी प्रभु योगी, संयमधारें नृप महयोगी।
साधु चार हजारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ८ ॥
पूर्व जन्म कृत कर्म प्रभावे, समुचित भिक्षा वस्तु अभावे।
वर्षाधिक निराहारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ९ ॥
क्रिया निरंतर सुव्रत साधन, प्रभु अनंत बल धारी धन धन
परम क्षमा चितधारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ १० ॥
श्रीश्रेयांस कुँवर पुण्योदय, अखातीज इक्षुरस सुखमय।
व्रत पारण हितकारी तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥ ११ ॥
एक लाख पूरव संयम धर, उत्तरोत्तर गुणठाना चढकर।
हुए मुक्ति अधिकारी, तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥१२॥
स्वामी शरणागत हूं तारो सकल तपोबल बुद्धि वितारो।
हरिपूजित पद धारी तुम को लाखों प्रणाम आ० ॥१३॥

स्तवन—५।

(तर्ज—बीकानेर स्वामी अन्तरजामी तारो पारसनाथ म्हाङ)

आदीश्वर स्वामी त्रिभुवन नामी अभिरामी अवतार।
पंचम गतिगामी निजगुणधामी आरामी अविकार रे ॥ टेर ॥

हे प्रभु कर्म से पीडित हू मैं, कर्म बडे विकराल ।
आप अकर्मक भाव के नायक, मेरी करो प्रतिपाल रे आ०॥१॥
घाती अघाती चार चार हैं, है उनका विस्तार ।
आतम के गुण आठ उन्ही पर ये करते अधिकार रे आ०॥२॥
मिथ्यात्वादिक हेतु सहित जो किरिया होती ताम ।
उससे आतम पडता पुद्गल, रूपी कर्म के पास रे आ० ॥ ३॥
शुभ किरिया है पुण्य का कारण, कचन बेडि समान ।
पाप अशुभ है लोह की बेडी दुस्सह दुःख निदान रे आ० ॥४॥
जीव अनादि कर्म अनादि, उभय अनादि सयोग ।
कनकोपल मे पावक जैसे, स्वामी साधो वियोग रे आ० ॥५॥
प्रभु गुण जैसे मुझमे भी है, सत्तागत गुण आठ ।
व्यक्त करो कृपया प्रभु मेरे, जैसे हुतासन काठ रे आ० ॥६॥
विघन घनाघन कर्म बली को, वर्षातिक तप धार ।
आतम ध्यान सुपावन पवने, आप किया परिहार रे आ०॥७॥
बध उदय उदीरणा सत्ता-गत मम कर्म अनेक ।
उसपर विजय करू मै कैसे ? यह दो नाथ विवेक रे आ० ॥८॥
गुण ठानों की महिमा भारी, फरमाइ जगनाथ ।
उत्तरोत्तर मे भी चढ पाउ, जो पकडो मुझ हाथ रे आ० ॥९॥
कर्म प्रवर्तक हो कर स्वामी हुए अकर्मक आप ।
यह तप त्याग तपोबल-बुद्धि देदो हे मा बाप रे आ० ॥१०॥
सुखसागर भगवान परमहरि-पूज्य दया कर देव ! ।
पाउ अकर्मक तुम पददर्शन तो नित मागु सेव रे आ० ॥११॥

स्तवन—६ ।

(तर्ज—अवधू सो जोगी गुरु मेरा—आसावरी)

बाबा ऋषभ जिनंद तपधारे ।
कर्म कलंक निवारें रे बाबा० ॥टेर॥
राज तजा सुख साज तजा निज आतम के उपयोगी ।
ग्राम नगर पुर विचरें स्वामी, संयम सुख के भोगी रे बा०॥१॥
भिक्षाविधि नहीं लोक पिछाने, प्रभु कर्मोदय जानें ।
मौन सहित वर्षाधिक तप को, परम क्षमा सह ठाने रे बा० ॥२॥
भक्ति सहित नरनारी प्रभु के अर्पण हित नित लावें ।
कन्या हय गय रथ रतनों को, नाथ नजर नहीं ठावे रे बा० ॥३॥
श्रीश्रेयांस कुँवर पुण्योदय जाती-समरण पावे ।
जिन दर्शन भिक्षा विधि जाने इक्षुरस वहिरावे रे बा०॥४॥
धन दाता धन पात्र प्रभुजी धन दिन तीज सुहावे ।
पंच दिव्य प्रगटे नित जय जय सुर गण पतिहरिखावें बा०॥५॥



स्तवन७—— ।

(तर्ज—तेरा तो हो चुका हूँ चाहे तारो या न तारो— कव्वाली)

आदीश देव प्यारे विनती जरा विचारो ।
जिन दास जान करके मेरी दशा सुधारो ॥टेर॥

स्वामी कहे बिना ही, सब आप जानते हैं ।
ज्ञानी प्रभो दयालु, अज्ञान को निवारो आ० ॥१॥
फैला प्रमाद भारी, कर्मों का नाथ मुझ पर ।
गुमराह हो रहा हू अपदेव ! बस उबारो आ०॥२॥
तप वर्ष भर किया था, हो आप तो बली हैं ।
बल हीन दीन मुझ में, बल बुद्धि को प्रचारो आ० ॥३॥
पर पौत्र आप का था श्रेयास भाग्यशाली ।
अति भक्ति कर सका था मैं क्या करु उचारो आ० ॥४॥
सुखसिन्धु नाथ भगवन् हरिपूज्य नाव मेरी ।
मझधार मे पडी है, करके दया उधारो आ० ॥ ५ ॥



स्तवन—८ ।

(तर्ज—मैं तो दिवाना प्रभु तेरे लिये)

प्रभु हाजिर खडे हम तेरे लिये ।
तेरे लिये हा तेरे लिये प्र० ॥ टेर ॥
नाभि नृप मरुदेवी के नदन ।
वदन करें हम तेरे लिये प्र० ॥ १ ॥
हाथी को लावें घोडों को लावें ।
रथ को मगावें प्रभु तेरे लिये प्र० ॥२॥

कन्या को लावें ब्याह रचावें ।
म्हल तैयार करें तेर लिये प्र० ॥३॥
रत्नों को लावें मणियों को लावें ।
कंचन का ढर करें तेर लिये प्र० ॥४॥
शाल दुशाले वस्तर अनोखे ।
अर्पण करें हम तेर लिये प्र० ॥५॥
यह दु:ख हम से देखा न जावे ।
दुखिये हैं हम प्रभु तेर लिये प्र० ॥६॥
ससार छोडा सयम को धारा ।
मौनी हुए प्रभु किसके लिये प्र० ॥७॥
वर्षीतप को धारें प्रभु जी ।
कर्म कलक हरने के लिये प्र० ॥८॥
श्रेयास आया इक्षुरस लाया ।
यह तो उचित था तेर लिये प्र० ॥९॥
भक्तो ने जाना तब से प्रभुजी ।
आहार देना तेरे लिये प्र० ॥१०॥
पच दिव्य तब प्रकटे थे भारी ।
'हरि' करें जय तेर लिये प्र० ॥११॥

स्तवन—९ ।

(तर्ज—मेरे मौला मदीने बुलालो मुझे)

आदिनाथ अनादि कलंक हरो ।
भागे सादि अनंत के भाव भरो ॥ टेर ॥
ज्ञान गुण उज्ज्वल अरुपी आप रूपे आतमा ।
कर्म से रूपी कलंकी हो रहा है खातमा ।
स्वामी कर्मों का जल्दी से आप करो । आ० ॥१॥
अंतराय अनंत ने घेरा मुझे है सर्वथा ।
जानते हैं आप, अपनी क्या कहूं दुख की कथा ।
अंतराय का अंत विशेष करो । आ० ॥ २ ॥
वर्षभर स्वामी निरंतर आपने व्रत थे किये ।
कैसे करूं निर्बल मुझे बल नाथ कुछ कुछ दीजिये ।
मेरी दीन दशा पर गौर करो । आ० ॥ ३ ॥
आप के तप तेज ने सब लोक आलोकित किये ।
उस तेज में इस दास को भी आप अपना लीजिये ।
घन घोर अंधेरे को दूर करो । आ० ॥ ४ ॥
सुख सिन्धु विभु भगवान हे हरिपूज्य दर्शन दीजियें ।
निज दयामय दृष्टि से पियूष वृष्टि कीजियें ।
बीच अन्तर को प्रभु दूर करो आ० । ॥ ५ ॥

स्तवन– १०-।

(तर्ज–रसिया बधावो रे मैया सावन आयो रे)

हम घर आवो हे स्वामी विनती को मानो रे ॥ टेर ॥
कन्या हय हाथी लेवो, भूरी धन धाम लेवो ।
––भाव पिछानो रे। हम० ॥ १ ॥
मणि रत्नों को लेलो, मोती के हार लेलो ।
दो प्रभु ध्यानो रे। हम० ॥ २ ॥
कचन के थाल लेलो–शाल दुशाला लेलो ।
विनय निधानो रे। हम० ॥ ३ ॥
मौन को खोल बतावो, चाहो सो नाम सुनाओ ।
मौन न ठानो र। हम० ॥ ४ ॥
ऐसे तो है दु ख होता, हिरदा है स्वामी रोता ।
करो निदानो रे। हम० ॥ ५ ॥
प्रभुजी वर्षीतप धारें, विघन कर्मों का टारें ।
अनुपम ध्यानो रे। हम० ॥ ६ ॥
पूरब भव श्रेयास देखा, पाया तब पूरा लेखा ।
दे रस दानो रे। हम० ॥ ७ ॥
सुखसागर भगवाना, हे हरिपूज्य प्रधाना ।
दो प्रभु ज्ञानो र। हम० ॥ ८ ॥

स्तुति—१

आदीश्वर स्वामी अंतरजामी आप,
वर्षी तप ठाया पूरे पुण्य प्रताप।
पूरव कृत दुष्कृत अंतराय कर दूर,
प्रकटाया पावन परमातमपद नूर ॥ १ ॥
कर्मों को तोड़े विना न होवे सिद्धि,
कर्मों के हटते होती सिद्धि समृद्धि।
जगमें जो पाते होते हैं वे सिद्ध,
उन को नित वंदू निज गुण-भान विशुद्ध ॥२॥
हैं कर्म सभी जड़ आतम के आधार,
दिखलाते अपना अद्भुत बल विस्तार।
कर्मों की सारी रचना श्री जिनदेव,
आगम में भाषें करूं सदा मैं सेव ॥ ३ ॥
चक्रेश्वरी देवी चक्रधारिणी माय,
गरुडासन धारी करती भक्त सहाय।
हरिपूज्य प्रभु की शासन देवी आप,
मा हरो हमारे पाप ताप सन्ताप ॥ ४ ॥

——:o:——

स्तुति—२ ।

सुखमा दुखमा के अंत समय भगवान,
युग आदि कर्त्ता हर्त्ता जग अज्ञान ।
शिव मारग बोधें निज जीवनदृष्टान्त,
धर्मातप धारें जय जय परम प्रशान्त ॥१॥
इन्द्रावेघन तप क्षमा सहित हितकार,
चित धारें वारें आठों कर्म विकार ।
आतम उजवालें परमातम पद धार,
ऋषभादिक जिनवर वन्दू वारवार ॥ २ ॥
निश्चय शिवगामी सब पद उद्यमवान्,
होता उद्यम से सफल समस्त विधान ।
कालादिक जानो सहयोगी समवाय,
जिन आगम बोले सेवो सदा अमाय ॥ ३ ॥
हरिपूज्य सुपावन जिन शासन के भाव,
भवि जो आराधे उनके अमित प्रभाव ।
सब देवी-देवा विघन हरें ततकाल,
सुख संपति पूरे भजो तजो जंजाल ॥ ४ ॥

स्तुति—३।

वद चैत की आठम संयम धारें नाथ,
साधु हो जावें चार सहस नर साथ।
पूरव भव भावी विघन घनाघन जोर,
वर्षीतप-ध्यानें हरें नमूं करें जोर ॥ १ ॥
भिक्षाविधि जानें नहीं लोक सविशेष,
देवें कन्या हय हाथी मणि मय वेश।
वर्षाधिकव्रतधर - वीतराग अवतार,
मौनी महात्यागी प्रभु की जय जयकार ॥२॥
जाती समरण से श्रीश्रेयाम कुमार,
प्रभु रूप पिछानें भिक्षा विधि विचार।
इक्षु रस अमृत वहिरावे शुभ भाव,
जिन आगम बोधे जय जय पुण्य प्रभाव ॥३॥
हरिपूज्य प्रभुका तप पारणदिन सार,
पावन तम जगमें अखातीज जयकार।
सोनैया सुमनस सुगध जल वरसाद,
सुर असुर करें जग जय जय पुण्य प्रसाद ॥४॥

स्तुति—४ ।

प्रभु आदि राजा आदि साधु सार,
आदि जिन आदि तीर्थंकर अवतार ।
नाभि मरुदेवा नंदन जग भरतार,
वर्षीतप धारी ऋषभ देव जयकार ॥ १ ॥

तीर्थंकर हो या हो साधारण लोग,
कृत करमों का तो करना होगा भोग ।
घाती व अघाती कर्म हैं आठ प्रकार,
जीते सो जिनवर जगमें जय जयकार ॥२॥

सिद्धान्त सुनावें आदीश्वर अरिहंत,
पूरव भव वृषमुख छींकी बांधे हंत । ।
उस विघन निपाके रहे वर्षभर आप,
आहार बिना व्रतधारीप्रभु माँबाप ॥ ३ ॥

तप जप खप करके यथाशक्ति विकार,
हरिपूज्य प्रभु से जोडो अपना तार ।
तोडो कर्मों को रहे न कटुतर क्लेश,
सुखकारि सहायक हों सुर असुर हमेश ॥४॥

—— ———

स्तुति—५ ।

अवसर्पिणी तीजा आरा अंत अनंत,
गुणधारी प्रकटे आदीश्वर जयवंत ।
साधु हो साधें वर्षाधिक तप घोर,
कर्मों को वारें वन्दूं जुग कर जोर ॥ १ ॥

सम्यग्दर्शन वर ज्ञान चरण चित धार,
साधक जन साधें आतम गुण अविकार ।
रूपी भावों को तज भज आप सरूप,
आतम परमातम वंदू त्रिभुवन भूप ॥ २ ॥

वर्षीतप आदि हैं तप विविध प्रकार,
उपशम घर भावे आराधक अधिकार ।
जिन आगम गावे गुरुगम साधन सार ।
सिद्धिगति पावें शाश्वत सुख भंडार ॥३॥

सुखसागर स्वामी ऋषभदेव भगवान,
जिनहरिपूज्येश्वर शासन विनय विधान ।
आराधें सुविहित तप विधि जो नर नार,
चक्रेश्वरी गौमुख उनको दे सुख सार ॥ ४ ॥





छमासी-तप-

चैत्यवन्दन-स्तवन-स्तुति

चैत्यवन्दन—१ ।

(शिखरिणी)

(१)

स्वयं संबुद्धात्मा परमपरमात्मा जिनपति-
र्जगच्चेता जेताऽतुलबलवतो मोहनृपतेः ।
तपो वीर्यश्चैर्यं रुपगतगुणोऽगाध महिमा,
महावीरस्वामी जयतु भगवत्तात्तगरिमा ॥

(२)

महाभीमोत्पातान् विदधति परं सङ्गमसुरे,
प्रभोर्यत्तस्यदृष्टिः परम करुणार्द्रा सममभवत् ।
तपश्चक्रे शान्तो जगति गुरु षाण्मासिकमहो,
महावीरस्वामी जयतु भगवान् पावनमहा ॥

(३)

सुखाम्भोधिः श्रीमाननुपममहादर्शचरितो,
महायोगी त्यागी भवन तमसाम्युज्ज्वल
स्फुरद्भक्ति प्रह्व प्रणतहरिपूज्यो जिनवरो,
महावीरस्वामी जयतु विजयी कर्मविषये ।

चैत्यवन्दन—२ ।

(हरिगीत)

(१)

ससार सुखकर सर्वदुख हर अतुल बलशाली प्रभु,
निश्चय उसी भव मोक्षगामी सयमी होते विभु ।
उपसर्ग से निश्चल रहे निज साधना में जो सदा,
वन्दू उन्ही श्रीवीर जिनवर को विनय से मैं मुदा ॥

(२)

सगम अधम सुर ने उपद्रव दुष्टता से जब किये,
षट्मास तक भगवानने व्रत तब निरन्तर थे किये
शान्ति क्षमा गुण धीरता वरवीरता रक्खी सदा,
वन्दू उन्ही श्रीवीर जिनवर को विनय से मैं मुदा ॥

(३)

प्रभु वीतदूषण ज्ञान भूषण पुण्य गुण भडार हैं,
सुख सिन्धु हैं जग बन्धु हैं भगवान है आधार हैं ।
हरिपूज्य हैं मां बाप हैं हतपाप हैं जो सर्वदा,
वन्दू उन्ही श्रीवीर जिनवर को विनय से मैं मुदा ॥

चैत्यवन्दन—२ ।

द्रुतविलम्बित

(१)

परम पावन जीवन विश्वमे,
अनुपमानगुणी भगवान की ।
सुरपति प्रणतातम भाव से,
स्तुति करे भव सागर तारिणी ॥

(२)

अधम संगम देव अभव्य था,
सुन परीक्षण के हित आगया ।
मलिन भाव भरा करता रहा,
अति उपद्रव हा छहमास लौं ।

(३)

प्रलय वायु भले बहता रहे,
पर सुमेरु कभी चलता नहीं ।
अचल आप रहे थक वो गया,
जय जिनेश्वर वीर जगद्गुरो ! ।

(४)

जब हतोद्यम हो सुर था गया,
प्रभु अकारण बन्धु दयानिधि ।

नयन में करुणाजल था भरा,
सुर निरर्थक दुर्गति पायगा ॥

(५)

जय सुखोदधि शासन नाथ हे,
जिनपते भगवान् जगदीश्वर ।
धन घड़ी धन भाग्य करे हरि,
विनय वंदन वीर जिनेश को ॥

चैत्यवन्दन— ४ ।

(१)

स्वयंबुद्ध परमातमा, महावीर भगवान् ।
तीर्थंकर चोईसवें, तप गुण पुण्य प्रधान ॥

(२)

छहमासी तप दो किये, पांच दिवस कम एक ।
महा अभिग्रह साथ में, क्षमा सहित सविवेक ॥

(३)

चौमासी नव की प्रभु, त्रिमासी दो वार ।
ढाई मासी दो दफे, दो मासी छह वार ॥

(४)

डेढ मास दो वार तप, करें प्रभु सुविलास ।
मास खमण बारह तथा, बहुत्तर आधे मास ॥

(५)

भद्र प्रतिमा दो दिवस, महाभद्र दिन चार।
दश दिन प्रतिमा सर्वतो भद्र वही अविकार॥

(६)

अट्ठम बारह छठ किये, दो सो पर गुनतीस।
सुर नर तिरि उपसर्ग को, सहने विसवा वीस॥

(७)

साडी बारह वर्ष दिन पनरह में भगवान।
घोर तपस्या यों करें, वन्दू विनय विधान॥

(८)

कर्म खपा केवल वरे, सुखसिन्धु भगवान।
जिन हरिपूज्य सदा नमु, दो प्रभु सुमत दान॥

१—शासन पति श्रीमहावीर भगवान् १२ वर्ष ६ महीने और १५ दिन तक छद्मस्थपने में रहे उतने ही समय में तपने १-छहमासी पूरी, दूसरी छहमासी पांच दिन कम ९-चौमासी २-तिमासी २-ढाईमासी ६-दोमासी २-डेढमासी १२-मास खमण ७२-आधे मास २-दिन भद्रप्रतिमा ४-दिन महाभद्रप्रतिमा १०-दिन सर्वतोभद्रप्रतिमा १२-तेले २२९-बेले इस प्रकार कुल ११-वर्ष ६-महीने और २५-दिन की दीर्घ तपस्या की। पारणा दिन ३४९ आये थे। वन्दन हो दीर्घ तपस्वी श्रीमहावीर भगवान को।

छमासी अभिग्रह चैत्यवन्दन—५

(१)

महावीर महिमा निधि-वदू भाव प्रधान ।
छद्‌मासी दिन पांचकम-उपवासी भगवान ॥

(२)

पोष वदी पडिवा प्रभु महाअभिग्रह धार ।
इस हालत में दे यदि-तोकल्पे आहार ॥

(३)

नृप-कन्या दासी हुई, मुण्डित मस्तक केश ।
पडी बेडिया पैर हों, रोती हो सविशेष ॥

(४)

अदर बाहिर पग किये, द्वार देश के पास ।
उडद बाकुले छाज मे लिये हुए हो खास ॥

(५)

भिक्षा से निवृत्त हो जब भिक्षाचर लोक ।
अट्ठम तप के पारणे, धर कर भाव अशोक ॥

(६)

सतियों में मोटी सती, चन्दन बाला सार ।
पूर्ण अभिग्रह को करे, धन धन धन्न अवतार ॥

(७)

सुख सागर भगवान "जिन-हरि" पूजित अविकार ।
महातपस्वी वीर को—वदूं वारवार ॥

⊛ स्तवन ⊛

ढाल—१

(तर्ज—नमो रे नमो मंगल मय महावीर)

नमो रे नमो वर्द्धमान भगवान
शासन नाथ महान। नमो० ॥ टेर ॥
देव सभा में देवपति करे, वीर प्रभु गुणगान । न० ।
त्रिभुवन विजयी भाव अकम्पित, धारें आतम ध्यान ।
नमो रे नमो० ॥ १ ॥
सागर वर गंभीर धीर प्रभु, अविचल मेरु समान । न० ।
सुर असुर समरथ नहीं प्रभुका, तोड सके शुभध्यान ।
नमो रे नमो० ॥ २ ॥
इंद्र सामानिक संगम सुर मन छाया तब अभिमान । न० ।
पापी छोवे कैसे न चलते ? देखूं करके निदान ।
नमो रे नमो० ॥ ३ ॥
दृढ भूमि पढालोद्याने पोलास नामक थान । न० ।
वीर प्रभु पर वीस महाउपसर्ग करे अज्ञान ।
नमो रे नमो० ॥ ४ ॥
उपसर्गों की दारुणता लख, सुरपति शोक प्रधान । न० ।
सुर सुरस भोग तजे मन चिंते धन धन धन भगवान ।
नमो रे नमो० ॥ ५ ॥

ढाल—२

(तर्ज—मेख रे उतारो राजा भरथरी)

रे मन प्रभु गुण में रमो, प्रभु है तारण हार।
रे मन० ॥ टेर ॥
सगम सुर उपसर्ग में-अनुपम आतमध्यान।
धारें वीर प्रभु नमो—भक्ति भाव प्रधान।
रे मन० ॥ १ ॥
धूली वर्षा सुर करे, भरे निज मन पाप।
वज्रमुखी करे चींटियें, पर प्रभु निर्मल आप।
रे मन० ॥ २ ॥
मच्छड डास घिमेल से चटकावे प्रभु अंग।
छोडे बिच्छु नेवला, चूहे काले भुजग।
रे मन० ॥ ३ ॥
हाथी हथिणी मदभरे, काटे व्याघ्र कराल।
अट्टहास्य करे अरे, होकर दुष्ट वेताल।
रे मन० ॥ ४ ॥
तेज हवा तलवारसी-और आंधी अपार।
फैलावे सुर पर प्रभु—आतम गुण अविकार।
रे मन० ॥ ५ ॥

❁ कलश ❁

शासन पति महावीर स्वामी दीर्घ तपधारी प्रभो !,
पावन तपोबल दीजियें दानी गुणी ज्ञानी विभो।
सुरत सिन्धु हे भगवान हे हरिपूज्य मैं सेवू सदा,
जय हो विजय हो आपकी गुण-कीर्तियां गाउं मुदा ॥१॥

स्तवन—२

(तर्ज—केसरिया थासु प्रीत लगी रे सचा भावसु)

श्रीवीर प्रभुजी आतम बल शक्ति अविचल दीजियें ॥टेर॥
छहमासी तप किया आपने, सगम सुर उपसर्गे।
क्षमा सहित नित विचरे स्वामी, नामी निजी निसर्गे रे।
श्री वीर० ॥ १ ॥
महा अभिग्रह मे भी अदभुत, छहमासी तप धारा।
चन्दन बाला उडद् बाकुले, खोला पुण्य भण्डारा रे।
श्री वीर० ॥ २ ॥
कर्म कल्क मिटाया स्वामी, अकलकी अवतारा।
शासन नायक गुण नित गाउ जय जय प्रभु जयकारा रे॥
श्री वीर० ॥ ३ ॥
राग द्वेष जड मूल उखाडे, समता गुण भण्डारी।
वीतराग योगीश्वर पूरे, जाऊ मैं बलिहारी रे।
श्री वीर० ॥ ४ ॥

यम नियमादिक आठ साधना, सहज सिद्ध प्रभु पाये ।
मन वच काया योग एकता आतम ध्यान लगाये रे ॥
श्री वीर० ॥ ५ ॥
परमातम पद ज्योति रूपे त्रिभुवन भूप जिनेशा ।
हे प्रभु कृपया दो उपकारी निज पावन गुण लेशा रे ॥
श्री वीर० ॥ ६ ॥
हो अकाम मनसे तप कैसे मारग यह दिखलाओ ।
प्रभु पद मे तन्मय हो जाऊ, यह विधि प्रभु सिखलाओ रे ॥
श्री वीर० ॥ ७ ॥
राज योग हठ योग न जानू, चक्र भेद नही जानू ।
इडा पिंगला नहीं सुषमणा, केवल तुमको मानू रे ॥
श्री वीर० ॥ ८ ॥
उपसर्गों में रहू अचंचल निर्भय विचरू स्वामी ।
वैसी शक्ति दीजे प्रभुवर, सविनय सदा नमामि रे ।
श्री वीर० ॥ ९ ॥
शूलपाणि अरु चण्डकोशिया, गोशाला दुखदायी ।
आत्म बोध पाये प्रभु तुमसे, धन वह पुण्य कमाई रे ।
श्री वीर० ॥ १० ॥
सुखसागर भगवान तुम्हीं हो, जिनहरि पूज्य उदारा ।
शरणागत वत्सल सुख दाता, दो प्रभ पद अधिकारा रे ॥
श्री वीर० ॥ ११ ॥

स्तुति—१

(१)

छद्‌मासी तपसे पावन जिनवर वीर,
अविचल सुरगिरिसम सागर सम गंभीर ।
संगम सुर द्वारा कर उपसर्ग अनेक,
वन्दू उपकारी वीतराग सविवेक ॥

(२)

शत्रु मित्रों में जिन का है समभाव,
अविकारी अनुपम जिनका पुण्य प्रभाव ।
उत्तरोत्तर शुद्धि शुक्लध्यान अधिकारी,
जिन वदू भावे जगदीश्वर उपकारी ॥

(३)

छद्‌मासी तप की महिमा अगम अपारी,
निष्काम भाव से करें भविक नरनारी ।
भव सागर तिरते भरते पुण्य भण्डारी,
जिन आगम गावे जाऊं मैं बलिहारी ॥

(४)

सिद्धायिका देवी साची शासन माई,
आराधे उन की करती नित्य सहाई ।
जिन हरिपूज्येश्वर वर्द्धमान भगवान,
सेवा अनुरागी दे मनवांछित दान ॥

स्तुति—२

(१)

प्रभु वीर जिनेश्वर महा अभिग्रह धारें,
छहमासे कम दिन पांच महातप धारें।
चदन बाला के उडद बाकुले नाथ,
तप पारें धन धन सविनय जोड़ू हाथ ॥

(२)

द्रव्य क्षेत्रादिक भेद विशेष विचार,
कर दिव्य अभिग्रह पारन तप गुण धार।
कर्मों को भेटे जगमें जो नर नार,
सिद्धातम होते वदू बारबार ॥

(३)

सब छोड परिग्रह सयम साधन हेतु,
भव सागर तारण कारण शुभ गुण सेतु।
तप महित अभिग्रह महिमा अपरपार,
जिन आगम गावे बोलो जय जय कार ॥

(४)

जिन-हरिपूजित पद शासन अनुपम एक,
जो सेवें भविजन त्रिकरण शुद्धि विवेक।
सिद्धायिकादेवी सिद्ध करे मनकाज,
तपधारी जनके, घरमें अविचल राज ॥

श्री वीस स्थानक तप–

॥ चैत्यवन्दन–स्तवन–स्तुति ॥

चैत्यवन्दन–१

दूहा–

वीस स्थानक साधना, साधे जो नर नार।
तीर्थंकर पदवी वरें, वन्दूं वारवार ॥

(हरिगीत)

शिव पथ सारथ वाह श्रीअरिहंत पद पहिले नमूं,
शिव अचल और अनंत अव्याबाध सिद्ध सुपद नमूं।
वर ज्ञान दर्शन चरण भूमि संघ प्रवचन पद नमूं,
ज्ञानादि पंचाचार युत आचार्य पद अनुपम नमूं ॥
सद्धर्म में थिर करण कारण थिविर पद सविनय नमूं,
निज पर समय पाठक बहुश्रुत भक्तिभर भाव नमूं।
इच्छा सुरोधन घोर तप साधक तपस्वी पद नमूं,
सर्वज्ञभाषित दिव्य आगम ज्ञान पद पावन नमूं ॥
तत्त्वार्थ में श्रद्धा अशंकित भाव दर्शन पद नमूं,
शुभ ज्ञान दर्शन चरण दायक वर विनय पद को नमूं।
वर चरण करणादि क्रिया चारित्र पद निर्भय नमूं,

शील व्रतादिक साधना पद ब्रह्मचर्य सदा नमूं ॥
प्रति समय शम संवेग आदिक भावना किरिया नमूं,
बारह प्रकारी बाह्य अभ्यंतर सुतप पद नित नमूं।
सत पात्र में शुभ दान, सर्व कषाय त्याग सुपद नमूं,
दश विध महागुण भाव वेयावच्च पद गतमद नमूं ॥
औषध प्रमुख से साधु जन सुखकर समाधिपद नमूं,
अक्षर पद श्लोकादि रूप अपूर्व श्रुतपद नित नमूं।
गुरु ज्ञान परिणमनादि श्रुत बहुमान पद सादर नमूं,
प्रवचन प्रभावन पद धरम उन्नति करण कारक नमूं ॥

दूहा—

सुखसागर भगवान 'जिन-हरि' पूजित पद सार।
लट भवरी के न्याय से-ध्याउ धन अवतार ॥

चैत्यवन्दन—२।

(रामगिरि रागेण-गीयते)

(१)

विंशति स्थानकाराधनायोगत:,
समवेत्तीर्थंकर-नामकर्म।
तीर्थकृन्नामकर्म प्रभावादहो,
जायतेऽनन्तगुणसिद्धिशर्म ॥ विंश० ॥

(=)

चेवरो नारि एतत्पदाराधन,

शुद्धविधि कुर्वते शान्तभावै

सर्वससा रिपूज्यात्मर्वा प्राप्नुयाद्,

मेदरहितात्मना सर्वथा वै ॥ विंश० ॥

(३)

एक मेक पद चापि सर्वार्थद,

सर्वपद पुण्यमहिमा ह्यनन्तः ।

तद्भजन्ता भजन्ता जना भावतो,

येन हरिपूजनार्हा भवन्त ॥ विंश० ॥

चैत्यवन्दन—३ ।

(१)

वीस स्थानक तप किया, प्रकट पुण्य अगाध ।

तीर्थंकर पद प्राप्त हो, हो सुख अव्याबाध ॥

(२)

तीर्थंकर जो है हुए, होंगे तीनों काल ।

वीस स्थानक साधते, तजकर आल पपाल ॥

(३)

अहंतादिक वीस पद, भेदा भेद विचार ।

निज पद में प्रगटे यदि, धन धन वह नर नार ॥

(४)

शक्ति रुप सबमे रहे, व्यक्त होय विधियोग ।
व्यक्त हुए उनको नमू, सविनय त्रिकरणयोग ॥

(५)

सुखसागर भगवान जिन, हरिपूजित जगदीश ।
तन्मय वन्दू तीर्थपति, उपकारी चौबीस ॥



चैत्यवन्दन—४ ।

(द्रुतविलंबित)

(१)

विजयि देव जिनेश्वर विश्वमें,
भव भयकर दु.ख हरे सदा ।
विशद बीस सुथानक सेवना,
निधि दिखाइ नमू शुभ भावसे ॥

(२)

जगतमे जितने पद ओर हैं,
परम आतम उन्नति के लिये ।
विलसते सब थानक बीसमें,
प्रभु दया नित सेवन म करू ॥

(१)

सुखनिधे भगवन् हरिपूज्य ह,
सुखद शक्ति कृपाकर दीजियें।
करम शत्रु हरा कर मैं करू,
तव पदाम्बुज पावन सेवना॥

स्तवन—१

(तर्ज—सिद्ध चक्रपद वन्दो रे भविका०)

बीस थानक जय कारी रे सेवो उपकारी अनिकारी।
तीर्थंकर पद हेतु भवोदधि तारण सेतु सुखकारी।
रे सेवो बीस थानक० ॥ टेर॥
अरिहंत सिद्ध सुपावन प्रवचन आचारज गुणधामी।
थिविर बहुश्रुत दिव्य तपस्वी ज्ञान परम अभिरामी।
रे सेवो बीस थानक० ॥ १॥
दर्शन विनय चरण शीलव्रत किरिया करम खपावे।
तप पद त्याग विशद वेयावच शुद्ध समाधि उपावे॥
रे सेवो बीस थानक० ॥ २॥
अपूर्वश्रुत अभ्यास ज्ञान बहु, मान अबोध निवारे।
तीर्थ प्रभावना करते आतम, परमातम पद धारे॥
रे सेवो बीस थानक० ॥ ३॥

प्रति पद महिमा अनुपम अद्भुत श्रीसद्‌गुरु परतंत्र ।
सरल अशठ थिर भावे साधक विचरे भाव स्वतंत्र ।
रे सेवो वीस थानक० ॥ ४ ॥

प्रतिपद व्रत छठ अट्ठम, भाखे वीस वीस जिनराया ।
ज्ञाताधर्म कथादिक पावन सूत्रे भेद बताया ।
रे सेवो वीस थानक० ॥ ५ ॥

तप पद में अधिका तप तपते आठ करम तप जावे ।
कनकोपलवत आतम निर्मल-ज्योति आप जगावे ।
रे सेवो वीस थानक० ॥ ६ ॥

विकथा विरहित जीवन पावन विषय विकार विहीना ।
वीस थानक शिव थानक दाता सचित आनदपीना ।
रे सेवो वीस थानक० ॥ ७ ॥

प्रातः सन्ध्या आवश्यकविधि-प्रतिक्रमण शुभ भावे ।
पदगुण माला ध्याने पूरव संचित पाप हटावे ।
रे सेवो वीस थानक० ॥ ८ ॥

देव वदन गुरु वन्दन मविलय तन्मय तद्‌गुणयोगी ।
अविराधक साधक हो अव्या-बाधपरम सुखभोगी ।
रे सेवो वीस थानक० ॥ ९ ॥

चउ शत व्रत छठ अट्ठम तपसे आराधन हो पूरा ।
तीर्थंकर पद नूर प्रकट हो, कर्मों का चकचूरा ।
रे सेवो वीस थानक० ॥ १० ॥

उद्यापन अधिकारी होते सुखसागर भगवाना ।
हरि पूजित जिन भाषित साधन साधे पुण्य प्रधाना ।
२ सेवो बीस थानक० ॥ ११ ॥

स्तवन—२ ।

(तर्ज—जिना प्रभु पासके देखे मेरादिल बेकरारी है)

(गजल)

नमू जिन देव जयकारी, हृदय शुधभाव लाकरके ।
जपू नित नाम की माला, हृदय शुधभाव लाकरके ॥ टेर ॥
तिराये तीर्थ कहलाता, प्रभुजी आप तीर्थंकर ।
मैं आउ आप तक कैसे ? हृदय शुध भाव लाकरके ॥ न० ॥
प्रभुजी बीस थानक तप, तपाता आठ कर्मों को ।
सन्निधि साधू कहो कैसे ? हृदय शुध भाव लाकरक ॥ न० ॥
जिनेश्वर आप ज्योतिर्मय, महा अंधेर हरते हैं ।
सुज्योति पाउ मैं कैसे ? हृदय शुध भाव लाकरके ॥ न० ॥
प्रभु अरिहंत ह स्वामी, सुनामी सिद्ध सुखकारी ।
बनू सुखिया यहा कैसे ? हृदय शुध भाव लाकरके ॥ न० ॥
अगम सुख सिन्धु हे भगवन् परम हरिपूज्य उपकारी ।
मिलू मैं आपसे कैसे ? हृदय शुध भाव लाकरके ॥ न० ॥

स्तवन—३।

(तर्ज—मैं आया तेरे द्वार पर कुछ लेकर जाउगा)

श्री तीर्थंकर भगवान तारणहार ध्याउगा।
पद सेवा करके प्रेम से तन्मय हो जाउगा ॥ टेर ॥
वीस स्थानक साधना खुद करके दिखलाई।
मैं भी निज शक्ति साधनामे नाथ लगाउगा। श्री० ॥१॥
जगजीव दयाका पाठ प्रभुवर पहिले दर्शाया।
निज जीवन मे मैं दया भावना को अपनाउगा श्री० ॥२॥
सब माया मिथ्या जाल को जिनवर ने तोडा है।
प्रभु सत्य साधना मे निज मन को रोज रमाउगा। श्री० ॥३॥
नित महा जागती जोत प्रभु परमातम पूरे है।
निज अतर आतम लीन हुआ मैं भी गुण गाउगा। श्री० ॥४॥
प्रभु सुखसागर भगवान जिन हरिपूजित उपकारी।
मैं अविकारी-योगों से पूजा प्रेम रचाउगा श्री० ॥५॥



स्तवन—४।

(तर्ज—केसरिया थासु प्रीत लगीरे सच्चे भाव सु)

तीर्थंकर वदो तारे दुःख वारे तिहुकाल मे ॥ टेर ॥
अनुपम आतम दर्शन योगे, परमातम पद ध्याने।

जल में कमल रहे ज्यों जीवन, साधकपद सनमाने।
रे तीर्थंकर वदो० ॥ १ ॥

महा मोहमति मूढ जगत जन हों जिन शासन रागी।
आधि व्याधि उपाधि मुक्त हो, भाव सुखी वड भागी।
रे तीर्थंकर वदो० ॥ २ ॥

तीन भुवन उपकार भाव, कल्याण मित्र जयकारी।
पुण्य महोदय गुणी महाशय, अविकारी अवतारीरे।
रे तीर्थंकर वदो० ॥ ३ ॥

बीस स्थानक महा साधना, साधक निज भव तीजे।
उत्तरोत्तर सुकृत सुज भोगी, प्रभुता गुण रस भींजे।
रे तीर्थंकर वदो० ॥ ४ ॥

सघ चतुर्विध तीर्थ थापते, अद्भुत अतिशय धारी।
तीर्थंकर वर नाम कर्म को, सफल करें बलिहारी।
रे तीर्थंकर वदो० ॥ ५ ॥

जनम-मरण-जीवन कल्याणी, जग कल्याण विधाता।
तीर्थंकर दर्शन धन पाउ, धन दिन पुण्य प्रभाता।
रे तीर्थंकर वदो० ॥ ६ ॥

प्रभु दर्शन परमारथ पूरण, जो कर पावे प्राणी।
ज्योतिर्मय जग म वह पावन, खोले निज गुण खाणी।
रे तीर्थंकर वदो० ॥ ७ ॥

अरिहंतादिक वीस पदों की, सेवा शिवसुख कारी ।
अप्रमत्त भावे कर भविजन, पावें पद अविकारी ।
रे तीर्थंकर वंदो० ॥ ८ ॥
आठ सिद्धि नवनिधि निज घरमें प्रकटे परमोदारी ।
तीनलोक साम्राज्य संपदा दासी बने विचारी ।
रे तीथकर वदो० ॥ ९ ॥
वीस स्थानक विधि जिन आगम, गुरु गम से नरनारी ।
आराधे साधे निज सिद्धि, अजरामरपद्धारी ।
रे तीथकर वदो० ॥ १० ॥
सुखसागर भगवान महोदय, जिन हरि पूजित स्वामी ।
वीस स्थानक गुणी गुण गाउ, सादर सदा नमामि ।
रे तीर्थंकर वदो० ॥ ११ ॥



स्तुति—१ ।

वीस स्थानक मे गुणि गुण भेदाभेद,
ध्याता जो ध्यावे निर्भय भाव अखेद ।
तीर्थंकर पदवी पावे पुण्य प्रधान,
वद् विधियोगे त्रिकरण शुद्धिविधान ॥१॥
त्रैकालिक भावे तीर्थंकर भगवान,
भव सागर तारण कारण रूप महान ।

होते हैं होंगे और हुए पदवीश,
सेवा से मेरा वन्दू जिन जगदीश ॥२॥
बीस स्थानक तप साधन सुखद विधान,
ज्ञातादिक आगम गावे गुरु गम ज्ञान।
आराधे भविजन पावे पद कल्याण,
सुविहित जिन आगम वन्दू जीवन प्राण ॥३॥
हरि पूजित श्री जिन शासन वासित भाव,
भवि बीस स्थानक साधन पुण्य प्रभाव।
सुर असुर उन्हीं के होंय सहायक आप,
फैले त्रिभुवन में साधक पुण्य प्रताप ॥४॥

स्तुति—२।

बीस स्थानक में सत्य देव गुरु धर्म,
तीनों तत्त्वों से कट जाते दुष्कर्म।
तीर्थंकर पदवी प्रकटे तीनों रत्न,
वन्दू नित मनिनय पावन पुण्य प्रयत्न ॥१॥
बीस स्थानक हैं निज आतम के भाव,
साधें जो भविजन परमातमपद दाव।
सत चित आनंदे रमण करें घान भाग,
वन्दू ज्योतिर्मय वीतराग महाभाग ॥२॥

प्रति पद की महिमा जगमें अपरपार,
सुनत विधियोगे आराधे नर नार ।
आगम अनुसारे बीस बीस उपवास,
वेला तेला से प्रगटे परम प्रकाश ॥ ३ ॥
बीसस्थानक सुखसागर दिव्य तरग,
भवताप मिटावें सादि अनत सुभग ।
आराधक जन के सुरगणपति हरिआप,
फैलावें जगमें अनुपम पुण्य प्रताप ॥ ४ ॥

स्तुति—२ ।

अरिहत सिद्ध प्रवचन सूरि थिविर बहुश्रुत वदोजी,
तपसी ज्ञान सुदर्शन सविनय चारित्र शील सुखकदोजी ।
किरिया तप वरत्याग वेयावच समाधि श्रुतअभ्यासोजी,
ज्ञान सुभक्ति तीर्थ प्रभावन थानक बीस विलासोजी ॥१॥
समकितधारी विषय विरागी जलमें कमल समानाजी,
जग जन प्रभु शासन अनुयायी करण सुभाव प्रधानाजी ।
बीस स्थानक आराधन कर तीर्थंकर-पद-धारीजी,
हुए हैं होते हैं होंगे वन्दू गुण अधिकारीजी ॥ २ ॥
चार सो व्रत या वेला तेला प्रतिपद बीस विधानेजी,
तन्मय होकर पद गुण माला बीस बीस वर ध्यानेजी ।
बीस स्थानक आराधन विधि जिन आगम से जानोजी,
व्रत पूरण उद्यापन पावन निजजीवन धन मानोजी ॥ ३ ॥
सुखसागर भगवान महोदय जिन शासन सुखकारीजी,

हरिपूजित वीस स्थानक तप जो करते नर नारीजी।
सासन देवी देव उन्हीं के होवें सानिधकारीजी,
करण करावण अनुमोदन फल पावें जाउ बलिहारीजी ॥४॥

स्तुति—४ ।

(वशस्थ)

श्री विंशतिस्थानक-साधनेन,
तीर्थंकरत्व लभते महात्मा।
ज्योति स्वरूप दधतं सुभक्त्या,
वन्दे सदानन्दि-हृदानिश तम् ॥ १ ॥
श्री विंशति स्थानक एव साधु-
स्फूर्जत्सुदत्रादिकतत्त्वमस्ति ।
ये तन्मयत्व दधते जगत्या,
तान्नौमि सिद्धान्निजरूपसिद्धान् ॥२॥
श्री विंशतिस्थानक सद्विधान,
जैनागमे प्रोक्तमगम्य-रूपम् ।
रत्नत्रय सत्य-सुराभिराम,
भव्या भजन्ता भवरोगमुक्त्यै ॥३॥
श्री विंशति-स्थानक-साधकाना,
प्रेङ्खत्पदस्याद्धरिपूज्यमेव ।
समऽपि देवा सतत समन्तात्,
साहाय्यमिद्ध ददते स्वय वै ॥ ४ ॥

श्री उपधान तप

* चैत्यवन्दन-स्तवन-स्तुति *

चैत्यवन्दन—१ ।

दुहा—

स्वस्ति श्रीसुखकर सदा, वर्द्धमान भगवान ।
स्वयबुद्ध शासन पति, वन्दू विनय विधान ॥१॥
प्रभु प्रवचन पावनविधि, परमातम-पद हेत ।
योगावचक भाव से, साधू शिर सकेत ॥ २ ॥
निज आतम उद्धार मे, पञ्चाचार विचार ।
अनलस भावे साधना, भापे जिन जयकार ॥३॥
उपादान अध्यातम गुण, ज्ञानाचार प्रधान ।
सहज सिद्धि साधक वरें, उद्यम कर उपधान ॥४॥
सुख सागर भगवान जिन, हरिपूज्येश्वर वीर ।
आज्ञा की आराधना, करू धन्य तकदीर ॥ ५ ॥

१—काले विणए बहुमाणे "उवहाणे" इति ज्ञानाचारे भेद

चैत्यवन्दन—२ ।

(द्रुतविलम्बित छन्द)

परम पावन बोध विधान मे, रविसमान जिनेश्वर वीर को।
सकल योग समाधि निमित्तसे, हृदयसे नत मस्तक हो नमूं ॥१॥
भव भयंकर सागर मे अहो! सनिधि साधक तारण के लिये।
विजयी वीर जिनेश्वर देवका, जयतु शासन जीवन पोतसा ॥२॥
"उप" समीप सदा परमात्मके, सुगुरु के सहयोग विशेप से।
प्रति निजातम "धान" सुधारणा, सफलता प्रभु के उपधानमें २
समवधान रहे उपधान मे, प्रभु पद प्रकटे परमात्मता।
परम सत्त्व विकास विलासमें, जनमना मरणा मिटता सभी ॥४॥
सहज हो सुखसागर लीनता, सुगम हो भगवद्गुण भावना।
जिमि करें 'हरि' वन्दन वीर को, तिमि करूं उपधान विधान से ५

चैत्यवन्दन—३ ।

(वसततिलका ॥ ३)

श्रीवर्द्धमान भगवान महान वीर !
सर्वाङ्गि पाप मल शोधन हेतु नीर ! ।
संसार ताप शमनार्थ समीर सीर,
वन्दू सदा सरल हो भवसिंधुतीर ॥ १ ॥

२—उप-समीपे धान-धारण-उपधानम् इति व्युत्पत्ति ।

हे नाथ नित्य भवदीय पुनीत आज्ञा,
पालू यथा प्रभु मुझे बलशक्ति देना ।
हो कर्म रोग भव भोग-वियोग मेरे
साधू स्वय चरणमें सहयोग सेवा ॥ २ ॥
निस्सारता प्रकट है फिर भी प्रभो हा,
ससार में रत रहू सुविडम्बना है ।
सद्‌बोध शक्ति दयया वरदान देना,
त्यागू निजात्म उपधान करू यथा मैं ॥३॥
स्वामी न है हृदय मे श्रुत भक्ति मेरे,
किंचिद् नहीं कर रहा गुरु भक्ति को भी ।
पुण्यप्रधान उपधान विधान योगे,
साधू करो सुकरुणा करुणानिधान ! ॥ ४ ॥
देवाधिदेव सुखसिन्धु जिनेश वीर !
आधार एक जगमे बस आपका है ।
तीर्थेश शासनपते ! हरिपूज्य नाथ !
स्वीय प्रसाद महिमा दिखलाइयेगा ॥ ५ ॥

१—उपधान में १—प्रभु आज्ञा का पालन २—तपस्या से कर्मों की निर्जरा ३—असार भूत शरीर में आत्म साधन रूप सार ग्रहण ४—श्रुत भक्ति ५—सद्‌गुरु भक्ति ६—इन्द्रिय जय ७—सवर साधना आदि सदनुष्ठान की परपरा होती है ।

चैत्यवन्दन—४।

(शिखरिणी-छन्द)

अनन्तात्म ज्योतिः प्रकट विभव प्रौढ महिमा,
चिदानन्द स्फूर्ति प्रगुणगणसत्कीर्तिगरिमा ।
अरागी अद्वेषी परम समता धाम जगमें,
महावीर स्वामी प्रतिदिन नमामि प्रभुवर ! ॥ १ ॥
सुनाये भव्यों को समवसरणे विस्तृततया,
सभी सत्तत्त्वों के विशदविधिसे अर्थ कहके ।
उपादेय–ज्ञेय–प्रमुख जड–हेयादिक अहो,
महावीर–स्वामी प्रतिदिन नमामि प्रभुवर ! ॥ २ ॥
निजात्मा में ज्ञानादिक गुणमणिज्योतिरहती,
मिलेगी खोजोगे नियम उपधान व्रततया ।
प्रभो वाणी सच्ची 'हरि' सुन सुखी हो फिर कहो,
महावीर स्वामी प्रतिदिन नमामि प्रभुवर ॥ ३ ॥

१—अत्थं भासइ अरहा सुत्तं गंथति गणहरा निउणा। निर्युक्तिः।
२—उपधान तप से सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्र आदि गुणों की ज्योति प्रकटती है ।

चैत्यवन्दन—५।

(शार्दूल विक्रीडित)

जीवाजीव विचार में स्फुटतया सिद्धान्त सचा कहा,
माने भेद विवेक से भवि करें पावें स्वय सिद्धता।
नारी या नरका नहीं कुछ जहा है भेद या खेद ही,
वैसा श्री जिनवीर का पद नमू स्याद्वाद शोभामयी ॥१॥
जीवात्मा जडभाव छोड निजमे खोजी बने औ यदि,
ज्ञानी के उपधान मे रत रहे हो मुक्ति गामी सही।
आठों कर्म कलेश लेश न रहे पावे निजी सम्पदा,
ऐसे श्री जिनवीर के वचन को सेवू सुनू सर्वदा ॥ २ ॥
जो सचे सुख सिन्धु बन्धु जगके कल्याणकारी सखा,
हैं श्रीमान्भगवान सर्वनयसे पुण्य प्रमाणोज्ज्वल ।
जो सचित् हरिपूज्य निर्भय निजानदी महावीर हैं,
धन्यात्मा उपधान मे विलसता वन्दू उन्हें भक्ति से ॥३॥

३—भगवान् महावीरदेव स्त्री पुरुप दोनों को मोक्ष का अधिकारी मानते हैं अत उपधानके भी स्त्री पुरुप दोनों अधिकारी हैं।

चउगति भीम भयंकर भवमें, मानव भव सुखदाया ।
पाया सफल करू प्रभु तुझपद, उपधाने मन भाया रे। म० १०।
सुखसागर भगवान् तुही हैं, जिन हरिपूज्य हमेशा ।
दर्शन वदन स्पर्शन करते, रहे न कर्म कलेशा रे ॥म० ११॥

स्तवन—२ ।

(तर्ज—जिल्ला की चद्रप्रभु जिनचन्द्र नमो सुखकदारे)

तारक तीरथ नाथ नमू उपकारी रे बर्द्धमान भगवान् ।
केवलज्ञान विराजित नित अविकारी रे सुजान ॥ टेर ॥
समवसरनमें बारह परिषद आगेरे वीतराग महान ।
तप उपधान प्रधान विधान सु भापे रे सुजान ॥ ता० १ ॥
आतम शत्रु कर्म महा दुखदायी रे हैं अतिबलवान ।
बिन तालीम न जीत सके जन कोई रे सुजान ॥ ता० २ ॥
तज परमाद विनाद पराक्रम धारो रे तन मन थिर ठान ।
कर्म पराजय होते जय जय कारी रे सुजान ॥ ता० ३ ॥
पांचों समवायी कारण मे जानों रे उद्यम परधान ।
गुरु गम कर उपधान सुसाधो सिद्धि रे सुजान ॥ ता० ४॥

१—कार्य सिद्धि में काल स्वभाव नियति पूर्वकृत कर्म और पुरुषाकार ये ५ समावायी कारण माने जाते हैं।

परमंगल-श्रुतस्कन्ध सुमंगल कारी रे परमेष्ठीस्थान।
निज आतम में व्यक्त करो शुभयोगे रे सुजान ॥ ता० ५॥
प्रतिक्रमण श्रुत स्कन्ध समाराधन से रे तज पाप निदान।
भव संताप समाप्त सभी हो जावे रे सुजान ॥ ता० ६॥
शक्रस्तव अध्ययन प्रभु गुणगाओ रे पढके गुणगान।
उत्तरोत्तर प्रभु पावन पदवी पाओ रे सुजान ॥ ता० ७॥
चैत्य स्तव अध्ययन मनन चिंतन से रे लट भँवरीध्यान।
करके आतम परमातम रूप लाओ रे सुजान ॥ ता० ८॥
नाम स्तव अध्ययने जिन चौबीसी रे जीवन परमान।
निजजीवन उन्नति हित पूजो भावे रे सुजान ॥ ता० ९॥
श्रुत स्तव सिद्धस्तव साधन करते रे प्रकटे विज्ञान।
ज्योतिर्मय निर्भय तन्मय हो जाओ रे सुजान ॥ ता० १०॥
सात करो उपधान मान मय भागे रे सुखमान प्रधान।
जागे गुण अनुरागे शिवसुख आगे रे सुजान ॥ ता० ११॥
सुख सागर भगवान परमपदगामी रे नामी अरधान।
घन उपधान विधान बनाया ध्याउ रे सुजान ॥ ता० १२॥
जिन हरि पूज्य सुतीरथनाथ नमामि रे समचित्तमितप्रान
वर्द्धमान भगवान वीर बलिहारी रे सुजान ॥ ता० १३॥

२—नवकार मंत्र। ३—इरियावहिया और तस्सउत्तरी। ४—नमुत्थुणं। ५—अरिहंत चेइयाणं। ६—लोगस्स। ७ पुक्खरवरदीवड्ढे। ८—सिद्धाणंबुद्धाणं।

स्तवन—३।

(तर्ज—छेरदार बीन्दुडो)

वीर प्रभु की सेवा वीर बनावे हो,
मन भावे त्रिकरणशुद्धेनित्यकरु।
कायरता मिट जावे शक्ति आवे हो,
मनभावे त्रिकरणशुद्धेनित्यकरु ॥ टेर ॥
प्रभु पद के उपधाने विविध विधाने हो,
इकताने प्रभु पद ध्यान करू।
गुणरतनों की माला शोभ बढावे हो,
शुभभावे दोष सारा दूर करू ॥ वी० १ ॥
इकसो चौदह दिन उपधाने पूरा हो,
हो शूरा नूर अपना प्रकट करू।
सूत्रवाचना तेरह वर अनुक्रम से हो,
गुरुगमसे दुर्मति दूर करू ॥ वीर० २ ॥
सूत्रअर्थ तदुभय निर्भय प्रभु वाणी हो,
गुणखाणी अनलस भावे सुना करू।
चिंतन मनन निदिध्यासन अविरामी हो,
परिणामी आतमबोध शोध करू ॥वी० २॥

सूत्र ग्रहण की शक्ति वह उद्देशा हो,
मति शेषा समुद्देश भाव भरूं ।
सूत्र पठन पाठन की पावन आज्ञा हो,
अनुज्ञा सद्गुरुवर से प्राप्त करूं ॥वी० ३॥
महामंत्र नवकार सुमहिमा भारी हो,
अधिकारी साधू सहजे सिद्धि वरूं ।
पूर्व चतुर्दश सार भूत सुखकारी हो,
अतिकारी पाप ताप परिहार करूं ॥वी० ५॥
आतम गुण पोषक पौषध व्रतधारी हो,
निरधारी निरतिचारतया विचरूं ।
दिव्य देव वदन वर नित्यानन्दी हो,
निर्द्वन्दी सद्गुरु सेव करूं ॥ वी० ६ ॥
देहादिक ममता तज जिनपद ध्यानी हो,
गत मानी सो लोगस का ध्यान करूं ।
परमेष्ठि गुणमाला रिमझीमसे हो,

१—सूत्र ग्रहण की शक्ति को अर्थात् सूत्रारंभ को 'उद्देश' कहते हैं। २—सूत्र ग्रहण की विशेष शक्ति को 'समुद्देश' कहते हैं। ३—सूत्र पठन पाठन की आज्ञा को 'अनुज्ञा' कहते हैं। ४—उपधान में पौषध करना होता है। ५—सो लोगस्स का काउस्सग्ग करना होता है। ६—२० बांधी नवकार वाली जपनी होती है अथवा जीवविचार नवतत्वादिक प्रकरणों का २००० श्लोक प्रमाण स्वाध्याय करना चाहिये।

निज जीसे पिण्डस्थादिक भेद करू ॥वी०७॥
दुर्लभ मानव भव मे प्रभु पद सेवा हो,
सुख मेवा देती है नित्य करू ।
आतम परमातम पद पुण्य प्रकाशे हो,
सुविलासे अनहद आनद मौज करू ॥वी०८॥
सुखसागर भगवान वीर जय कारी हो,
भयहारी सेवा करके अभय वरू ।
जिन हरि पूज्य परमपद के उपधाने हो,
गुणठाने ऊचे ऊचे चढा करू ॥ वी० ९ ॥

स्तवन—४ ।

(तर्ज-प्रभु धर्मनाथ मोहे प्यारा जगजीवन मोहन गारा)
राग—वनझारा

महावीर प्रभु भगवाना, नित वन्दू विनय निधाना ।
प्रभुका करके उपधाना, नित करू प्रभुपद ध्याना ॥ टेर ॥
स्वामी उपधान बताया, सद्गुरु गम विधि सिखलाया ।
साते भय सात भगाया, सुख सात प्रधान उपाया ॥म०१॥
पहिले दूजे उपधाने, वर नदी रचना ठाने ।
दिन वीस वीस ... व्रत साडी बारह जाने ॥म०२॥

शुभ पाच तीस दिन तीजे, व्रत सी उन्नीस करीजे ।
चोथा दिन चार चहीजे, ढाई व्रत साधन कीजे ॥म०३॥

पंचम अडतीस गिनाया, व्रत साडी पनरह पाया ।
छट्टे छह दिन दिखलाया, व्रत साढातीन सुनाया ॥प०४॥

सप्तम उपधान सुहाया, व्रत चौविहार इक गाया ।
क्रम सुविहित गुरु समझाया, आतमगुण अधिक बढाया ।म.५।

कही सूत्र वाचना सारी, तेरह अनुपम अविकारी ।
सूत्रारथ उभय विचारी, भवसागर तारणहारी ॥म०६॥

हो सावधान उपधाने, पौषध व्रत पुष्टि विधाने ।
सो लोगस पावन ध्याने, प्रभु माला वीस बखाने ॥म०७॥

उप आत्म निकट में जानों, कर्मों की हाण पिछानो ।
'उवहाण' अर्थ विज्ञानो, शिवसाधन सिद्धि निदानो ॥म०८॥

जिन आना पालन होवे, सुव्रत साधन शुभ होवे ।
फिर पाप ताप मिट जावे, गुणठान विशुद्धि उपावे ॥म०९॥

सुकृत जल की घटमाला, मुक्ति रमणी वरमाला ।
धरमूर्त रूप गुणमाला, गणपति से पहरू माला ॥म०१०॥

सुखसागर श्री भगवाना, शासन पति वीर महाना ।
जिन हरिपूजित उपधाना, साधू धन पुण्य प्रधाना ॥म०११॥

१—मुक्ति वनी वरमाला, सुकृत जलाकर्षणे घटमाला ।
साक्षादिव गुणमाला, माला परिधीयते धन्यै ॥

स्तवन—५।

(तर्ज—भीनासर स्वामी अंतरजामी तारो पारसनाथ)
(राग–माढ)

जिनवर जयकारी वीर तुम्हारी सेवा सुखदातार।
उपधान विधाने पुण्य प्रधाने साधू जगदाधार ॥ टेर ॥
भवसागर तारक प्रभुवर तीरथ प्रकटाया है आप।
तीरथ नाथ अनाथ के रक्षक वदू हे मा बापरे ॥जि० १॥
भव भव भटका बहुविध नटका साग अनेक बनाय।
पर नहीं खटका अटका मेरा दो झटका जिनराय रे ॥जि० २॥
तुम पद पावन जीवन मेरा कर पाउ भगवान।
प्रभु उपधाने मानू धन धन सफल सकल अवधान रे ॥जि० ३॥
शासन वासित चित्त बनाउ छोड़ू आल पपाल।
सुमत विधि विरचाउ गाउ प्रभु गुण गीत रसाल रे ॥जि०४॥
अति व्याप्ति अव्याप्ति असभव दोष रहित गुण ज्ञान।
आतम का प्रकटाउ उज्वल, करके वर उपधान रे ॥जि०५॥
आधि व्याधि और उपाधि–ससारी जजाल।
घेरा डाल रहे मुझ पे पर, हैं प्रभु आप दयाल रे ॥जि०६॥
ज्ञान प्रकाशक तप गुण शोधक–सयम गुप्ति प्रधान।

१—नाण पयासग सोहओ तवो सजमोय गुत्ति करो।
तिण्हपि समाओगे मुक्खो जिण सासणे भणिओ॥
आवश्यकनियुक्ति

आप बताया मोक्ष उपाउ, करके प्रभु उपधान रे ॥जि० ७॥
काल अनादि कुबोध मिटाउ आतम बोध विशोध ।
कर्म कलक मिटा अकलकी–पाउ गुण अनिरोध रे ॥जि० ८॥
प्रभु पद सेवा निजपद दायक–शिव सपत्ति निधान ।
सरल सुकोमल भाव धरू नित–साधु हो सावधान रे ॥जि०९॥
सुखसागर भगवान तुम्ही हो–शासन नायक वीर ।
हो सर्वज्ञ कहू क्या स्वामी सिखलादो तदबीर रे ॥जि० १०॥
जिन हरि पूज्य प्रभु तुम सेवा कर पाउ अविराम ।
केवल एक यही वर मागू करके पुण्य प्रणाम रे ॥जि० ११॥

स्तुति—१ ।

श्री वर्द्धमान जिनेश जगदाधार शासन नाथ को ।
वर विनय वन्दन के लिये मैं नित्य जोड़ू हाथ को ॥
प्रभु चरण मे उपधान की आराधना सुखदायिका ।
साधु सुखद वामालिका देती स्वय शिवनायिका ॥१॥
सद्ज्ञान के आधार मे उपधान भेद विशेष है ।
करते हुए गुरु बोध से सब दूर होते क्लेश है ॥
होते हुए होंगे त्रिकालिक भाव म उपधान से ।
जन सिद्ध जो व दू उन्हें शुभ भावपूर्णऽवधान ॥२॥
उपधान अथ विपेश फरमाया स्वय अरिहत ने ।
वह सूत्र में गूथा मधुर गणधर गुरु गणवतने ॥

उपधान सूचक सूत्र पावन अर्थ तदुभय सर्वदा।
सुनता रहू करता रहू श्री सुगुरु गम पाकर मुदा ॥ ३ ॥
उपधान के सुविधान में जो सावधान बने रहें।
सुखसिन्धु वे भगवान पदवी अन्त में पाते रहे ॥
समदृष्टि देवी देवगण नायक हरि संकट हरें।
सपति भरे सुखको करे जय जय हमेशा उच्चरे ॥ ४ ॥

स्तुति २।

अधिकार विना की बातें व्यर्थ अनेक,
अधिकारी पाते सकल सफल सविवेक।
चौदह पूरव का सार मत्र नवकार,
अधिकारी होकर आराधू जयकार ॥ १ ॥
सुविहित गुरु सेवा दे अधिकार अशेष,
अधिकार बताया उपधाने सविशेष।
जो पुण्य प्रभावे पावें मानें भाव,
साधक सिद्धातम वदू निजगुणदाव ॥ २ ॥
उपधान बताया सात भेद सिद्धान्त,
आराधन करते भय भागे एकान्त।
श्रीमहानिशीथे उतराध्ययणसरूप,
गुरु गम आराधू दूर करू भवकूप ॥ ३ ॥
हरि पूजित श्रीजिनशासन वासित देव,
उपधानी जनकी आपद हरें सदैव।

सुरमणि सुरतरु भी सुलभ रूप हो जाय,
प्रमुदित हो जगजन पावन कीरति गायँ ॥ ४ ॥

स्तुति ३ ।

शासन पति वंद् महावीर भगवान,
प्रभु समवसरणमें उपदर्शे उपधान ।
आराधक भविजन यथाशक्ति आराध,
सिद्धिगतिपावें निजसुख अव्याबाध ॥ १ ॥
उपधान बताये सात, अनेक प्रकार,
आराधन विधि भी यथायोग्य अधिकार ।
साधक जन साधें कर्म रोग मिट जाय,
निजपद परमेष्ठी पावन गुण प्रकटाय ॥ २ ॥
जीरा जीवादिक तत्त्वारथ उपयोगी,
बारह व्रत धारी दशविरतिगुण भोगी ।
उपधान विधानी होते हैं गुणरागी,
जिन आगम गावे जीवन म बडभागी ॥ ३ ॥
सुखसागर सच्चा पद उपधान प्रधान,
आराधक होते अतगति भगवान ।
जिन हरि पूजित पद सेवें देवी देव,
दुख दोहग टाले सुख पूरें स्वयमेव ॥ ४ ॥

स्तुति ४ ।

जिन आज्ञा पालन–सवर साधनयोग,
सुव्रत आराधन आतम गुणउपयोग ।
उपधाने होते मापे श्रीभगवान,
महावीर जिनेश्वर वदू विनय विधान ॥ १ ॥
अतिचार विना की किरिया कारण रूप,
करते जो भविजन होते त्रिभुवन भूप ।
मव कर्म खपा कर परमातम पद आप,
प्रगटावें वन्दू सिद्ध जगत माबाप ॥ २ ॥
श्री पचमगलश्रुत–स्कधादिक है सात,
उपधान करणसे मागे भव भी सात ।
सुखसाता प्रकटे यथाशक्ति अभिराम,
जिन आगम बोले प्रात करू प्रणाम ॥ ३ ॥
सुखसागर प्रभुवर महावीर भगवान,
जिन हरिपूज्येश्वर उपदेशा उपधान ।
आराधें उनके रोग शोक सताप,
समकित दृष्टि सुर मटें बढे प्रताप ॥ ४ ॥

स्तुति ५ ।

उप निकट [illegible] नादिक गुणधाम,
धान अर्थ अभिर

फरमावें प्रभुवर वीतराग अरिहंत,
नित वन्दू भावे श्रीजिनवर जयवंत ॥ १ ॥
उव आतम निकट ठाण कर्म की साध,
उवहाण अरथ यह समरथ अव्याबाध ।
जो पावें आतम परमातम पद रूप,
वंदू नित उनको सत चित ज्योतिमरूप ॥२॥
चौसठ दो माले वर पैंतीसठ एक,
अट्ठावीसठ चउ छक्कड एकड एक ।
सविवेक समाराधन जिन आगम सार,
वन्दू आराधू पाउ पद अविकार ॥ ३ ॥
सातों उपधाने सुखसागर भगवान,
जिनहरि पूज्येश्वर फरमाया फरमान ।
आराधो भविजन देवी देव हमेश,
सब चिंता चूर चिंतित दें सविशेष ॥ ४ ॥

इति उपधान तप चैत्यवन्दन-स्तवन
स्तुति संग्रह समाप्त

* श्रीमहावीर सप्तविंशति भव वर्णन *

❀ वृहत् स्तवन ❀

दोहा—

श्री महावीर जिनेंद्र को, नमन करू चित लाय।
भव सतावीस मैं कहू, सुख कर गुरू सुपसाय ॥

ढाल १

वर्द्धमान जिनवर तणा जी चरण नमू चितलाय० (इस तर्ज में)

भविकजनवीर चरित चितधार, वरलो समकित सार भ० ॥टेर॥
पश्चिम महाविदेह में जी, "नयसार" नाम सुधार।
काष्ठ कारण रण में गयो जी, लागी भूख अपार ॥भवि० ।१॥
भोजन करने के लिये जी, बैठा तरुवर छाह।
ततखिण मन परिणति हुई जी, पामी हर्ष उछाह ॥भवि० ।२॥
अतिथि जो आवे यहा जी, होवे आतमशुद्ध।
भाग्य उदय हो माहरो जी, देऊ दान विशुद्ध ॥ भवि० । ३ ॥
मारग सम्मुख देखते जी, बैठो "श्री नयसार"।
भाग्य सयोगे भेटिया जी पथ चूके अणगार ॥ भवि० ४ ॥
मन में हर्ष धरी घरी जी, पहुन्यो मुनिवर पास।
धन्य घटी दिन आज है जी, पूरी मुझ मन आस ॥ भवि० ५ ॥

मास दस "नय सार" के जी, आवे मुनि महाराज।
शुद्धमान आहार को जी, लेवे संयम काज ॥ भवि० ६॥
भव्य जीव तब जान के जी, देवें गुरु उपदेश।
समकित मोती उपज्यो जी, छीप स्वाति जल लेश ॥ भवि०७॥
द्रव्य भाव मारग लहेजी, साधु "श्री नय सार"।
साधु संगे साधुता जी, प्रकटत है निर्धार ॥ भवि० ८॥
भव पहिले समकित लह्योजी, दीजे भव "देवलोक"।
पहिले एक पल्योपम जी, 'हरि' सुख पावे अशोक ॥भवि०९॥

दोहा—

सौधर्म सुर लोक म, भोगवी सुख अपार।
"दक्षिण" भरते अवतर्यो, श्री नयसार सुधार ॥

ढाल २

भरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी० (इस तर्ज में)

विनिता नगरीर "चक्री भरत" के, घर मे लियो अवतारजी।
नाम दियो शुभ "मरिची" मात ने, उत्सव पूर्वक सार जी॥
देखो २ रे करम तणीगति, भूलादे निज भान जी दे० ॥ टेर॥
बाल कालकोरे छोड़ युवा भयो, करे अनेक विलास जी।
एक दिन वन्दन आदि जिनंद गयो, पायो बोध विकास जी॥
देखो २ रे करम तणी गति ॥ १ ॥

वैराग रग रे दिक्षा ले सदा, सेवे श्री जिननाथ जी।
तीव्र तपस्या रे शरीर सहे नहीं, जाणी छोड़े साथ जी॥
देखो २ रे करम तरणी गति ॥ २॥

हो एकाकी रे मन में चितवे, मैं करू नूतन चाल जी।
हाथ कमण्डलु सिर छत्री धरे, पग चाखडी गले माल जी॥
देखो २ रे करम तणी गति ॥ ३॥

हाथ त्रिदड रे भगवा वेष मे, रागि हुआ जेण चित्त जी।
मुड मुडावे रे चोटी सिर धरे, राखे योज्ञोपवीत्त जी॥
देखो २ रे करम तणी गति ॥ ४॥

स्नान करे और जाप जपे सही,—आदि जिनद—त्रिकाल जी।
कन्द मूल का रे नित भक्षण करे, करे समकित समाल जी॥
देखो २ रे करम तणी गति ॥ ५॥

प्रभु जी के पीछे रे पीछे रहे सदा, विचरे देश विदेश जी।
समवसरन सब सुरपति जब करे, बैठे बहिर प्रदेश जी॥
देखो २ रे करम तणी गति ॥ ६॥

आवे कोई रे वन्दन कारणे, दे सचा उपदेश जी।
सयम रगे रे रगी भाव से, भेजे प्रभु जी के पास जी॥
देखो २ रे करम तणी गति ॥ ७॥

करते पावन अवनीतल प्रभु, आवे नगरी 'विनीता' जी।
भरतादिक सब नरसुरवर मिलि, वदन करे इक चित्ता जी॥
देखो २ रे करम तणी गति ॥ ८॥

वदन करके रे निज थानक प्रति, बैठे भरत सनूर जी।
चार परखदा रे बैठी दख के, पूछे भूप पहर जी ॥
देखो २ रे करम तणी गति ॥ ९ ॥

आप समान रे कोई जीव है, भवमरन मझार जी ॥
भाखे प्रभु जी रे बहिर है सही, मरिची नाम कुमार जी।
देखो २ रे करम तणी गति ॥ १० ॥

चौथे आरे क होगा अन्त में चोवीसम "श्री वीर जी"।
'क्षत्रिय कुंड' रे 'सिद्धारथ' घरे, 'त्रिशला' नन्दन धीर जी ॥
देखो २ रे करम तणी गति ॥ ११ ॥

श्री मुख वाणी र 'भरत' सुणि करी, पाया हर्ष अपार जी।
मरिचि निकट मे र जावे प्रेम से, बोले बचन उदार जी।
देखो २ र करम तणी गति ॥ १२ ॥

तू वासुदेव रे पहिलो भरत में, मुकाविजये चकी जी।
फिर तू होगा रे जिन चोवीसमो, महावीर नामे नकी जी।
देखो २ र करम तणी गति ॥ १३ ॥

पहिली दूजी रे पदवी को नहीं, नांही त्रिदंडी वेष जी।
श्री तीर्थंकर पद को मैं नमू, सुन श्री जिन उपदेश जी ॥
देखो २ रे करम तणी गति ॥ १४ ॥

वन्दन करके र भरत घरे गयो, सुन कर नाचे मरिची जी।
धन २ मुज को रे धन मुज वंश को धन मुझ करणी ऊंची जी।
देखो २ रे करम तणी गति ॥ १५ ॥

मेरे दादा रे तीर्थ कर हुए, तात हुए मुज चक्री जी।
उन दोनों से रे अधिका मैं हुआ, वासुदेव पद चक्री जी।
देखो २ रे करम तणी गति ॥ १६ ॥
तीर्थंकर की रे पदवी मुझको, होगी विसवा वीस जी।
तीनों पदवी को मैं भोग के, लूंगा मुक्ति जगीश जी॥
देखो २ रे करम तणी गति ॥ १७ ॥
नाच कूद के रे कुलको मद कर्यो, बाध्यो कर्म को बंध जी।
'हरि' कहें तातें रे होगा देखना, नीच गोत्र सम्बन्ध जी॥
देखो २ रे करम तणी गति ॥ १८ ॥

दोहा—

बहुत समय के बाद मे, उपजा रोग शरीर।
वैयावच के कारणे, बोलावे मुनि धीर ॥ १ ॥
देख त्रिदंडी वेषको, कोई न पूछे सार।
उद्वेगी हो कर करे मन मे खूब विचार ॥ २ ॥

ढाल ३

भेखरे उतारी राजा भरथरी० (इस तर्ज में)
स्वारथ का संसार है, स्वारथ विन नहीं कोय जी।
रोग हुआ मुझ अंग में, कोई न पूछे आय जी॥
पश्चात्ताप करे घणो, करतो हृदय विचार जी॥ टेर॥
अब जो मुझ साता हुवे, तो शिष्य करूं दो चार जी।

शिष्य बिना संसार में, कोई न करे उपचार जी ॥
पश्चात्ताप करे घणो ॥ १ ॥

रोग गयो साता हुई, आया कपील कुमार जी ।
उपदेश दे के भेजियो, समवसरन मझार जी ॥
पश्चात्ताप करे घणो ॥ २ ॥

ऋषभ जिनन्द वन्दन करी, देखे ऋद्धि विस्तार जी ।
धर्म नहीं यह साधु को, मिलसी सुर ऋद्धि सार जी ॥
पश्चात्ताप करे घणो ॥ ३ ॥

फीका आप कपील कहे, तुमही कहो शुभ धर्म जी ।
यहां तो कुछ भी है नहीं, संसार तारक धर्म जी ॥
पश्चात्ताप करे घणो ॥ ४ ॥

मन में हर्ष धरी कहे, मरिची सुनो कपील जी ।
सत्य धरम तुम को कहूं, छोड़ो जगत जंजाल जी ॥
पश्चात्ताप करे घणो ॥ ५ ॥

वेष धरायो आप को, मन कल्पित कर धर्म जी ।
कोटा कोटी सागर मित, भव वर्द्धक बांधा कर्म जी ॥
पश्चात्ताप करे घणो ॥ ६ ॥

लाख चौरासी पूर्व का, भोगवी आयुष्य कर्म जी ।
भव तीजा पूरा करे, जावे पांचवें स्वर्ग जी ॥
पश्चात्ताप करे घणो ॥ ७ ॥

चौथे दश सागर सहा सुख भोगी सुर लोक जी।
पांचवें कोल्लाक ग्राम में, हुआ ब्राह्मण कौशिक जी॥
पश्चात्ताप करे घणो ॥ ८॥

आयुष अस्सी लाख को, त्रिदण्डी ले भेख जी।
छट्ठे भव फिर द्विज हुआ, बहत्तर पूरब लाख जी॥
पश्चात्ताप करे घणो ॥ ९॥

त्रिदण्डी साधु हुवा, थुणा नगरी मझार जी।
मरके सातवें भव गया, कल्प सुधर्मा सार जी॥
पश्चात्ताप करे घणो ॥ १०॥

अग्नि द्योत द्विज आठमें, साठ पूरब लख आय जी।
त्रिदण्डी नव मे सही, दूजे देव मे जाय जी॥
पश्चात्ताप करे घणो ॥ ११॥

दशमें भव मन्दिर पुरे, अग्नि भूति द्विज नाम जी।
छप्पन पूरब लाख में, त्रिदण्डी भयो नाम जी॥
पश्चात्ताप करे घणो ॥ १२॥

इग्यारम भव सुर भयो, तीजे सनत कुमार जी।
च्यव श्वेताम्बीनगरी में, भारद्वाज द्विज सार जी॥
पश्चात्ताप करे घणो ॥ १३॥

चालीस लाख पूरब भलो, वार मे त्रिदण्डीनाण जी।
मरके चौथे महेन्द्र में, तेरम भवगुण खाण जी॥
पश्चात्ताप करे घणो ॥ १४॥

राजगृह में द्विज हुओ, थावर नाम चौत्रिश जी।
पूर्व आयुत्रिदण्डीयो, चौदवें भव सुजगीश जी॥
पश्चात्ताप करे घणो॥ १५॥

पनरम भव में अवतर्यो, सोलम विश्व भूति जीव जी।
विशाखनन्दी घर जमियो, धारणीकुखी से दीव जी॥
पश्चात्ताप करे घणो॥ १६॥

वीर चरित शुभ भाव सें हरि गावे गुण धाम जी।
सार विचार सुधार के, पायो शिव आराम जी॥
पश्चात्ताप करे घणो॥ १७॥

दोहा—

बाल काल को छोड़ के, भयो युवान कुमार।
वाडी में सुख भोगवे, नित प्रति सुर समसार॥ १॥
देखी राज कुमार मन, उपज्यो द्वेष कराल।
जाय पिता को यो कहे, दो वाड़ी ततकाल॥ २॥
शांत कर निज पुत्र को, सोचे भूप उपाय।
विश्व भूति को भेजता, वश कारण सिंह राय॥ ३॥
जीत पकड़ लाया दिया, तिन चाचे के हाथ।
वाडी में जान लगा, जय कीरति के साथ॥ ४॥
द्वार पाल तब यो कहे, रहते राज कुमार।
नहीं जा सकते आप अब, तब जाने छल सार॥ ५॥

पुन: क्रोध से वह कहे, सुन लेना नर नार।
वश भ्रश में ना करूं, नहीं तो क्या है भार ॥ ६ ॥

चूर वृक्ष कनीठ का, दे कर मुष्ठि प्रहार।
निज दुश्मन को चूरते, लगे जु इतनी बार ॥ ७ ॥

ढाल ४

माला काटे रे आला जीव का० (इस तर्ज में)

तुम देखो भाई गहन गति रे गतिचार की ॥ टेर ॥

सभूति गुरू पास मेरे जा कर दिक्षा लीध।
तपस्या कर निज काय सुकाई, वर्ष हजार प्रसिद्ध जी ॥
तुम देखो भाई ॥ १ ॥

विचरन्ता अवनीतलेरे, मथुरा पुर में जाय।
भौंरे ज्यों गोचरी फिरते को, पाडे दौडी गाय जी ॥
तुम देखो भाई ॥ २ ॥

विशाख नन्दी भाई चचेरा, हस कर बोले वानी।
कनीठ फल बल गयो कहा कह, अरे महा अभिमानी जी ॥
तुम देखो भाई ॥ ३ ॥

सुन कर साधु परिणति पलटी, क्रोध हुआ विकराल।
गाय घुमाई सींग पकड़ कर, छोड़ दिई सभाल जी ॥
तुम देखो भाई ॥ ४ ॥

दशा चल अब तप फल हो तो पूरब भव निर्वाग।
मार्ग में तुमको यों कहन, विश्व भूति अणगार जी।
तुम देखो भाई ॥ ५ ॥

कर निदान अनशन शरीर, महा शुक्र में जाय।
सत्रह में भव में सुरविलसत, उत्कृष्ट स्थिति पाय जी।
तुम देखो भाई ॥ ६ ॥

पोतन पुर नृप प्रजापति की पुत्री रत्न हुई।
भव अष्टादश में वह जनमा, सप्त सुपन की साखी जी॥
तुम देखो भाई ॥ ७ ॥

निशान नन्दी जीवसिंह को, धारी वासुदेव।
त्रिपृष्ठ नाम हुआ भरत में, करता सुरनर सेव जी॥
तुम देखो भाई ॥ ८ ॥

पाप पुष्ट उन्नीसम भव में, सप्तम नरक में जाय।
बीसम भव में सीम भयङ्कर, सिंह हुआ वन राय जी॥
तुम देखो भाई ॥ ९ ॥

इक्कीसम भव चौथी नरक से, निकल फिरे संसारा।
बाईसम भव साधारण नर, पुण्य क्रिया व्रत धारा जी॥
तुम देखो भाई ॥ १० ॥

तेईसम भव राय धनञ्जय, धारिणी कुखे आय।
चौद सुपन सूचित अवतरिया, प्रिय मित्र चक्रीराय जी॥
तुम देखो भाई ॥ ११ ॥

पोट्टीलाचारज से दीक्षा, शीक्षा युत ले पाले ।
वर्ष कोटि संयम आराधी, पाप पुञ्ज को बाले जी ॥
तुम देखो भाई ॥ १२ ॥

महाशुक्र मे चौवीसमभव, सुर पदवी सुखकारा ।
पचवीसम भव में फिर होवे, नन्दन राजकुमारा जी ॥
तुम देखो भाई ॥ १३ ॥

दीक्षा पोटील सूरि से ले, वीस पदों को ध्यावे ।
तीर्थङ्कर नर नाम बंधन कर, भाव दया दिल भावे जी ॥
तुम देखो भाई ॥ १४ ॥

लाख वर्ष चारित्र पालते, यावज्जीव उदारा ।
मास खमण से करे पारणा, क्षमा सहित हितकारा जी ॥
तुम देखो भाई ॥ १५ ॥

वर्ष लाख पचवीस कारे, आयुष अपना भोगी ।
'हरि' कहे नित वन्दु नन्दन, महा तपस्वी योगी रे ॥
तुम देखो भाई ॥ १६ ॥

दोहा—

प्राणत नामक स्वर्ग में, पुष्पोत्तर सुविमान ।
छव्वीसम भव मे वहा, सुर सुरनाथ समान ॥ १ ॥
देव लोक सुख भोगते, करते पुण्य विधान ।
जिन यात्रा स्नानादि मे, नित्य रहें गुलतान ॥ २ ॥

बीस सागर आयुस्थिती, पूर्ण भई जब सार ।
च्यवन दुःख नहीं जानते, सब च्यवते निर्धार ॥ ३ ॥
च्यवन कल्यानक के समय, सुरन भयो कल्यान ।
पुण्यवान आवे जहाँ प्रकट वहाँ निधान ॥४॥

ढाल ५

"राग—गुजराती गरबा पद्धति"

भविया वीर चरित्र पवित्र हृदय में धारनारे ।
भीषण भव सागर से कैसे पावे पार ॥
इस का वीर चरित से, खूब किया निस्तार ।
आतम परिणत कर निज कर्म विचार विचारना ॥टेर॥

साखी–पूर्व गोत्रमद करन से, नीच गोत्र कर बन्ध ।
सत्तागत उस कर्म से, हुआ उदय सम्बन्ध ॥
सत्तावीसम भव ब्राह्मण कुल में, अवतारना र । भवि० १।

साखी–"ब्राह्मण कुण्ड" सुगांव मे "ऋषभ दत्त शुभनाम ।
"देवानन्दा" ब्राह्मणी, तस गृहिणी गुणधाम ॥
करती चौदसुपनलख, दिव्यगरभ प्रतिपालनारे । भवि० २।

साखी–शक्रसिंहासन थरहर्यो, जाने च्यवन सुरिंद ।
सात आठ पग सामने, जा वन्दे जिन चन्द ।
शक्रस्तव की सविनय शक्र करे उचारनारे ॥ भवि० ३ ॥

साखी-पूर्वाभिमुख सिंहासने, वन्दन करके इन्द्र ।
बैठ सचिन्त विचारता, पुरुष शलाका वृन्द ॥
मिथ्यादिक नीच कुलमें, जन्म न लें निर्धारनारे ।भवि०४।

साखी-हरिण गमेषी देव को, हुकम करे सुरराय ।
क्षत्रिय कुण्ड सुगाम में, श्रीसिद्धरथराय ॥
त्रिशलादेवी कुक्षि श्रीजिन को सचारनारे । भवि० ५।

साखी-हरिण गमेषी देव तब, दिव्य गति को धार ।
देवानन्दा कूख से, करे प्रभु अपहार ॥
दूजा गर्भ हरण कल्याणक शास्त्र धारनारे । भवि० ६।

साखी-सिंहादिक चौदह सुपन, देखे परम उदार ।
त्रिशला निजपतिसे तदा, सुनती स्वप्नविचार ॥
होगा चक्री वा तीर्थंकर सुत सुखकारनारे । भवि० ७।

साखी-बीते नौ महीने उपर, दिन जब साडे सात ।
हस्तोत्तर नक्षत्र में, जनमे त्रिभुवन तात ॥
तीजा जन्म कल्याणक, तीन भुवन जयकारनारे।भवि०८।

साखी-छप्पन दिशा कुमारिया सूति कर्म कर जाय ।
सुरपति सुर सह सुरगिरी स्नात्र महोत्सव ठाय ॥
सुरपति शका स्वामी करते, दूर निवारनारे॥ भवि० ९॥

साखी-सिद्धारथ दश दिन करे, उत्सव विविध प्रकार ।
ज्ञाती गोत्री जिमा कहे, वर्द्धमान गुणधार ॥
सुत है, वर्द्धमान शुभनाम इसे स्वीकारनारे॥ भवि० १०।

साखी–यौवन वय नृप पुत्रिका, परणे भोगे भोग।
अट्ठा वीसम वर्ष में, मात पिता सुरलोक॥
होते पूर्ण अभिग्रह, होती दीक्षा धारणारे॥ भवि० ११॥

साखी–नन्दी वर्द्धन बन्धु के, आग्रह से दो वर्ष।
साधुवत् संसार मे, नहीं शोक नहीं हर्ष॥
करते दान संवत्सर से, दारिद्र विदारणारे॥ भवि० १२॥

साखी–जय नन्दा भद्दा कहे, लोकान्तिक तब देव।
तीर्थ प्रवर्तन को करो, हे स्वामी स्वयमेव॥
ज्ञाता स्वामी हैं तो भी, उनकी आचारणारे॥भवि० १३॥

साखी–नन्दी वर्द्धन इन्द्र सह, करे दीक्षोत्सव भार।
द्रव्य भाव से लोच कर, तब होते अनगार॥
यह चउ ज्ञान तथा कल्याणककी सहचारनारे।भवि०१४।

साखी–एकाकी योगी हुए, छठ तप के धारी।
बार वर्ष छाद्मस्थ्य में, दु ख सहें भारी॥
जिनमे शूलपाणि संगम, कष्टपुंवना धारनार।भवि०१५।

साखी–घाति करम के नाश से, प्रकटा केवल ज्ञान।
त्रिसमय भावी भाव को, तब जानें भगवान॥
पचम कल्याणकम करते, 'हरि' नित वन्दनारे।भवि०१६।

दोहा—

हस्तोत्तर नक्षत्र में, ये कल्याणक पच ।
स्वाति मे निर्वाण पद, छोड़ें भव परपच ॥

ढाल ६

सिद्ध चक्र पद ध ध्दोरे भविका० (राग आशावरी)

श्री जिन वीर नमामी रे भविका, श्रीजिनवीर नमामि ।
केवल ज्ञान दिवाकर स्वामी, श्री जिन वीर नमामि ॥ टेर ॥
समवसरण सुर वर रचेरे, जहँ राजे जिन चन्दा ।
अमृत वाणी पीवत प्राणी, पावत परमानन्दारे ॥ भवि० १ ॥
चकित पडित ब्राह्मण इन्द्र—भुत्यादिक दश एक ।
गणधर गुणधर होते भारी, पाकर बोध विवेकरे ॥ भवि० २ ॥
सघ चतुर्विध सद्गुण भाजन, थापन कर सुरज कारा ।
द्विविध चउविध धर्म प्ररूपे, आराधक भवपारारे ॥भवि० ३॥
अन्तिम चउमासी प्रभु पावन, पावापुर पधारे ।
सोल प्रहर तक उपदेशामृत—वर्षे अखडित धारेरे ॥भवि० ४॥
कर्म विपाकोदय प्रभुजी के, भविजन पुण्य सहाई ।
कारण योगे कारज प्रकटे, यह अनुमन थिर थाईर ॥भवि० ५॥
चौदवमें गुणठाणे स्वामी, पुद्गुल बन्ध वियोगी ।
शैलेशी करणे करी होते, शिर रमणी के भोगी रे ॥ भवि० ६ ॥
कार्ती अमावस स्वाति नक्षत्रे, कल्याणक निर्वाणी ।

मिश्रित भावे उत्सव करते, इन्द्र तथा इन्द्राणी रे ॥भवि० ७॥
भावोद्योत जिनेश्वर के निन, श्री अम्मावस काली ।
गण राजा विरचन तब अगम, द्रव्योद्योत दिवाली रे। भवि०८
आदिम गौतम गणधर स्वामी, वीर विभु पटधारो ।
देव मुखे निर्वाण सुने तब शोच करे अति भारी रे भवि० ९॥
मोह दशा रजनी क्षय होते, परम महोदय शाली ।
केवलनान रवि तब प्रकटयो, प्रकटी अद्भुतलालीरे भवि० १०।
आय 'हरि' उत्सव तब रचते, करते जय जय कारी ।
गौतम वीर प्रभु नित नमते, सघमें मगलाचारीरे। भवि० ११

कलश

अति स्वच्छ खरतरगच्छ में सवेग रग विराजते ।
श्री सद्गुरु सुख सिंधु विभु भगवानसागर गाजते ॥
तस शिष्य हरि सागर गणी उन्नीस में त्यासी समे।
घेरावले श्रीवीर भव गाते विजय हो सघ मे ॥

वीस स्थानक संक्षिप्त विधि

शुभ मुहूर्त मे सद्गुरु के पास नदी स्थापन पूर्वक वीस स्थानक तप लेना चाहिये । वीस पदों की वीस ओली होती हैं । प्रत्येक पद का अठम से छठ से चौविहार उपवास से यावत् आयंबिल एकासनादि से आराधन होता है । दो मास से छह मास मे वीस-वीस यथाशक्ति अठम आदि तप पूरे करने होते हैं । वीस वीस माला प्रति पद मे गिननी होती है । आचार्य उपाध्याय-थिवर साधु चारित्र गौतम तीर्थ इन सात पदों मे पौषध अवश्य करना चाहिये । गुणानुवाद, आरंभत्याग, गुरुदेव भक्ति एवं आत्मचिंतन विशेष तया करना चाहिये । पद गुण के भेद प्रमाण संख्यामे लोगस्स का कायोत्सर्ग एव नमस्कार करने चाहिये । मृतक-जातक सूतक-स्त्री धर्म आदि में तप नहीं गिना जाता । छहमाससे उपर ओली नहीं होती ।

श्री अरिहंत पद नमस्कार १ ।

१ अशोकवृक्ष प्रातिहार्य संयुताय श्रीअर्हते नम ।
२ पुष्प वृष्टि ,, ,, ,,
३ दिव्य ध्वनि ,, ,, ,,
४ चामर युग ,, ,, ,,
५ सिंहासन ,, ,, ,,

६ भामण्डल " " "
७ दुंदुभि " " "
८ छत्रत्रय " " "
० अपायापगमातिशय सयुताय
।तिशय " " "
११ वचनातिशय " " "
१२ ज्ञानातिशय " " "

ॐ ह्रीँ णमो अरिहंताण—माला २०

श्री सिद्धपद नमस्कार २ ।

(१)

१ छह संस्थान रहिताय श्रीसिद्धाय नमः ॥ ६ ॥
२ पांच वर्ण " " ५
३ दो गंध " " २
४ पांच रस " " [illegible]
५ आठ स्पर्श " " ८
६ तीन वेद " " ३

३१

(२)

१ मति ज्ञानावरणीय कर्म रहिताय श्रीसिद्धाय नमः ।
२ श्रुत " " ।

३ अवधि	,,	,,	
४ मनः पर्यव	,,	,,	
५ केवल	,,	,,	।५।
६ निद्रा दर्शना वरणीय		,,	
७ निद्र निद्रा	,,	,,	
८ प्रचला	,,	,,	
९ प्रचला प्रचला	,,	,,	
१० स्त्यानर्द्धि	,,	,,	
११ चक्षु	,,	,,	
१२ अचक्षु	,,	,,	
१३ अवधि	,,	,,	
१४ केवल	,,	,,	।९।
१५ साता वेदनीय	,,	,,	
१६ असाता वेदनीय	,,	,,	।२।
१७ दर्शन मोहनीय	,,	,,	
१८ चारित्र मोहनीय	,,	,,	।२।
१९ नरकायु	,,	,,	
२० तिर्यगायु	,,	,,	
२१ मनुष्यायु	,,	,,	
२२ देवायु	,,	,,	।४।
२३ शुभ नाम	,,	,,	
२४ अशुभ नाम	,,	,,	।२।

२५ उच्चैः गोत्र ” ”
२६ नीचैः गोत्र ” ” ।२।
२७ दानान्तराय ” ”
२८ लाभान्तराय ” ”
२९ भोगान्तराय ” ”
३० उपभोगान्तराय ” ”
३१ वीर्यान्तराय ” ” ।५।

३१

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं—माला २०

श्रीप्रवचन पद नमस्कार ३ ।

१ सर्वत प्राणातिपात विरताय श्री प्रवचनाय नमः
२ सर्वतो मृषावाद ” ”
३ सर्वतो अदत्तादान ” ”
४ सर्वतो मैथुन ” ”
५ सर्वत परिग्रह ” ”
६ देशत प्राणातिपात ” ”
७ देशतो मृषावाद ” ”
८ देशतो अदत्तादान ” ”
९ देशतो मैथुन ” ”
१० देशतः परिग्रह ” ”

११ दिशा परिमाण व्रतयुक्ताय ,,
१२ भोगोपभोग परिमाण ,, ,,
१३ अनर्थदण्ड विरताय ,, ,,
१४ सामायिक सहिताय ,, ,,
१५ देशावगासिक ,, ,,
१६ पोषहोपवास ,, ,,
१७ अतिथि सविभाग ,, ,,
१८ विधि सूत्रागमाय नमः ,,
१९ वर्ण सूत्रागमाय ,, ,,
२० भय सूत्रागमाय ,, ,,
२१ उत्सर्ग सूत्रागमाय ,, ,,
२२ अपवाद सूत्रागमाय ,, ,,
२३ उभय सूत्रागमाय ,, ,,
२४ उद्यम सूत्रागमाय ,, ,,
२५ सर्वनय समूहात्मक प्रवचनाय ,,
२६ सप्तभगी रचनात्मकाय
२७ द्वादशांगी गणिपिटकाय नमः

ॐ ह्रीँ पवयणस्स—माला

श्री आचार्यपद नमस्कार ४।

१ प्रतिरूप गुण धारकाय श्री आचार्याय नमः।
२ तेजस्वि गुण " "
३ युगप्रधान गुण " "
४ मधुर वाक्य गुण " "
५ गम्भीर गुण " "
६ धैर्य गुण " "
७ उपदेश तत्पराय " "
८ अपरिश्रावि गुण " "
९ सौम्य गुण " "
१० अभिग्रह धराय " "
११ अविकथ गुण " "
१२ अचपल गुण " "
१३ सयम शील गुण " "
१४ प्रशान्त हृदयाय " "
१५ क्षमा गुण " "
१६ मार्दव गुण " "
१७ आर्जव गुण " "
१८ निर्लोभगुण " "
१९ तपो गुण " "
२० संयम गुण " "
" "

२१ सत्यधर्म ,, ,,
२२ शौच गुण ,, ,,
२३ अकिञ्चन ,, ,,
२४ ब्रह्मचर्य ,, ,,
२५ अनित्यभावना भावितात्म ,,
२६ अशरण भावना ,, ,,
२७ संसार भावना ,, ,,
२८ एकत्व भावना ,, ,,
२९ अन्यत्व भावना ,, ,,
३० अशुचि भावना ,, ,,
३१ आश्रव भावना ,, ,,
३२ संवर भावना ,, ,,
३३ निर्जरा भावना ,, ,,
३४ लोक स्वरूप भावना ,, ,,
३५ बोधि दुर्लभ भावना ,, ,,
३६ दुर्लभ धर्मसाधक भावना ,,

ॐ ह्रीँ णमो आयरियाण—माला २०



श्री स्थविर पद नमस्कार ५।

१ लौकिक स्थविर देशकाय लोकत्तर स्थविराय नमः।
२ देश स्थविर ,, ,,
३ ग्राम स्थविर ,, ,,
४ कुल स्थविर ,, ,,
५ लौकिक कुल स्थविर ,,
६ लौकिक गुरु स्थविर ,,
७ लोकोत्तर श्री संघ स्थविराय ,,
८ लोकोत्तर पर्याय स्थविराय ,,
९ लोकोत्तर श्रुत स्थविराय ,,
१० लोकोत्तर वयः स्थविराय ,,

ॐ ह्रीँ णमो थेराण—माला २०

श्री उपाध्यायपद नमस्कार ६।

१ आचारांग सूत्र पाठकाय श्री उपाध्यायाय नमः
२ सुयगडांग ,, ,,
३ समवायांग ,, ,,
४ ठाणांग ,, ,,
५ भगवती ,, ,,
६ ज्ञाताधर्मकथा ,, ,,

७ उपासकदशा	,,	,,
८ अंतगडदशा	,,	,,
९ अनुत्तरोववाइ	,,	,,
१० प्रश्नव्याकरण	,,	,,
११ विपाक	,,	,,
१२ उववाइ उपांग श्रुत		,,
१३ रायपसेणी	,,	,,
१४ जीवाभिगम	,,	,,
१५ पन्नवणा	,,	,,
१६ जम्बूद्वीप पन्नत्ति	,,	,,
१७ चंद्रपन्नत्ति	,,	,,
१८ सूरपन्नत्ति	,,	,,
१९ निरया वलिया	,,	,,
२० कप्पिया	,,	,,
२१ पुप्फचुलिया	,,	,,
२२ पुप्फिया	,,	,,
२३ वह्निदशा	,,	,,
२४ द्वादशांगी श्रुत	,,	,,
२५ द्वदशांगी श्रुतार्थव्यापकाय		,,

ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाण २० माला

श्री साधुपद नमस्कार ७।

१ पृथ्वीकाय रक्षकेभ्यः सर्वसाधुभ्यो नम
२ अप्काय रक्षकेभ्य " "
३ तेउ काय " "
४ वाउ काय " "
५ वनस्पतिकाय " "
६ त्रसकाय " "
७ सर्वत प्राणातिपात विरतेभ्यः " "
८ सर्वतो मृषावाद " "
९ सर्वतो अदत्तादान " "
१० सर्वतो मैथुन " "
११ सर्वतः परिग्रह " "
१२ सर्वतो रात्रि भोजन " "
१३ कषाय वारकेभ्य " "
१४ श्रोत्रेन्द्रिय विषय " "
१५ चक्षु इन्द्रिय विषय " "
१६ घ्राणेन्द्रिय विषय " "
१७ रसेन्द्रिय विषय " "
१८ स्पर्शेन्द्रिय विषय " ,
१९ शीतादि परीषह सहनकारकेभ्य " "
२० क्षमादि गुणधारकेभ्य "

२१ भाव विशुद्धेभ्य. ,, ,,
२२ मनोयोग विशुद्धेभ्यः ,,
२३ वचनयोग विशुद्धेभ्य. ,,
२४ काययोग विशुद्धेभ्यः ,,
२५ मरणान्त उपसर्गधीरेभ्यः ,,
२६ अंगोपांग सकोचनशीलेभ्यः ,,
२७ निर्दोष सयमयोग युक्तेभ्यः ,,
ॐ ह्रीं णमो लोए सव्व साहुण २० माला

श्री ज्ञानपद नमस्कार ८ ।

१ स्पर्शनेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह मति ज्ञानाय नमः ।
२ रसनेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह ,,
३ घ्राणेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह ,,
४ श्रोत्रेन्द्रिय व्यञ्जनावग्रह ,,
५ स्पर्शनेन्द्रिय अर्थावग्रह ,,
६ रसनेन्द्रिय अर्थावग्रह ,,
७ घ्राणेन्द्रिय अर्थावग्रह ,,
८ चक्षुरिन्द्रिय अर्थावग्रह ,,
९ श्रोत्रेन्द्रिय अर्थावग्रह ,,
१० मनोऽर्थावग्रह ,,
११ स्पर्शनेन्द्रिय ईहा ,,

१२ रसनेन्द्रिय ईहा
१३ घ्राणेन्द्रिय ईहा ,,
१४ चक्षुरिन्द्रिय ईहा ,,
१५ श्रोत्रेन्द्रिय ईहा ,,
१६ मन ईहा ,,
१७ स्पर्शनेन्द्रिय अपाय ,,
१८ रसनेन्द्रिय अपाय ,,
१९ घ्राणेन्द्रिय अपाय ,,
२० चक्षुरिन्द्रिय अपाय ,,
२१ श्रोत्रेन्द्रिय अपाय ,,
२२ मनोऽपाय ,,
२३ स्पर्शेन्द्रिय धारणा ,,
२४ रसनेन्द्रिय धारणा ,,
२५ घ्राणेन्द्रिय धारणा ,,
२६ चक्षुरिन्द्रिय धारणा ,,
२७ श्रोत्रेन्द्रिय धारणा ,,
२८ मनो धारणा ,,
२९ अक्षरश्रुतज्ञानाय नम ,, ॥२८॥
३० अनक्षर श्रुत
३१ संज्ञि श्रुत ,,
३२ असंज्ञि श्रुत ,,
३३ सम्यक् श्रुत ,,
,,

३४ मिथ्या श्रुत ज्ञानाय नमः ।
३५ सादि श्रुत " "
३६ अनादि श्रुत " "
३७ सपर्यवसित श्रुत " "
३८ अपर्यवसित श्रुत " "
३९ गमिक श्रुत " "
४० अगमिक श्रुत " "
४१ अंग प्रविष्ट श्रुत " "
४२ अनंग प्रविष्ट श्रुत " " ।१४।
४३ अनुगामि अवधि ज्ञानाय नमः ।
४४ अननुगामि अवधि " "
४५ वर्द्धमान अवधि " "
४६ हीयमान अवधि " "
४७ प्रतिपाति अवधि " "
४८ अप्रतिपाति अवधि " "
४९ ऋजुमति मनः पर्याय ज्ञानाय नमः ।
५० विपुलमति मनः पर्याय " ।२।
५१ लोका लोक प्रकाशक श्री केवल ज्ञानाय नमः ।

ॐ ह्रीँ णमो नाणस्स—२० माला

श्री दर्शनपद नमस्कार ९

१ परमार्थ सस्तव रूप सम्यग्दर्शनाय नमः ।
२ परमार्थज्ञातृ सेवन रूप ,,
३ कुलिंग दर्शन वर्जन रूप ,,
४ कुदर्शन वर्जन रूप ,, ,,
५ शुश्रुषा रूप ,, ,,
६ धर्मानुराग रूप ,, ,,
७ वैयावृत्य रूप ,, ,,
८ श्रीअर्हद् भक्ति विनय रूप ,, ,,
९ श्री सिद्ध विनय रूप ,, ,,
१० चैत्य विनय रूप ,, ,,
११ श्रुत विनय रूप ,, ,,
१२ धर्म विनय रूप ,, ,,
१३ साधु विनय रूप ,, ,,
१४ श्री आचार्य विनय रूप ,,
१५ श्री उपाध्याय विनय रूप ,,
१६ प्रवचन विनय रूप ,,
१७ दर्शन विनय रूप ,, ,,
१८ ससारे जिन सारमिति चिंतन रूप ,,
१९ ससारे जिन मति सारमिति चिंतन रूप
२० ससारे जिन मतस्थित माध्वादि सारमिति

२१ शंका दूषण रहिताय ,, ,,
२२ कांक्षा दूषण रहिताय ,, ,,
२३ विचिकित्सा-दूषण रहिताय ,,
२४ कुदृष्टि प्रशंसा दूषण रहिताय ,,
२५ तत्परिचय दूषण रहिताय ,,
२६ प्रवचन प्रभावक रूप ,,
२७ धर्मकथा प्रभावक रूप ,,
२८ वादी प्रभावक रूप ,,
२९ नैमित्तिक प्रभावक रूप ,,
३० तपस्वी प्रभावक रूप ,, ,,
३१ प्रज्ञप्त्यादि विद्याभृत्प्रभावक रूप
३२ चूर्णाञ्जनादि सिद्धि प्रभावक रूप
३३ कवि प्रभाव रूप ,, ,,
३४ जिन शासन कौशल भूषण रूप
३५ प्रभावना भूषण रूप ,, ,,
३६ तीर्थ सेवा भूषण रूप ,,
३७ धैर्य भूषण रूप ,, ,,
३८ जिन शासन भक्ति भूषण रूप
३९ उपशम गुण रूप ,, ,,
४० संवेग गुण रूप ,, ,,
४१ निर्वेद गुण रूप ,, ,,

४२ अनुकंपा गुण रूप ,,
४३ आस्तिकता गुण रूप ,,
४४ परतीर्थिकादि वंदन वर्जन रूप ,,
४५ परतीर्थिकादि नमस्कार वर्जन रूप ,,
४६ परतीर्थिकादि आलाप वर्जन रूप ,,
४७ परतीर्थिकादि सलाप वर्जन रूप ,,
४८ परतीर्थिकादि अशनादिदान वर्जन रूप ,,
४९ परतीर्थिकादि गंधपुष्पादिदान वर्जन रूप ,,
५० राजाभियोगाकार युक्ताय ,,
५१ गणाभियोगाकार युक्ताय ,,
५२ बलाभियोगाकार युक्ताय ,,
५३ सुराभियोगाकार युक्ताय ,,
५४ कान्तार वृत्याकार युक्ताय ,,
५५ गुरु निग्रहाकार युक्ताय ,,
५६ सम्यक्त्व धर्मस्य मूलमिति चिंतन रूप ,,
५७ सम्यक्त्व धर्मपुर द्वारमिति चिंतन रूप ,,
५८ धर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतन रूप ,,
५९ धर्मस्याधार मिति चिंतन रूप ,,
६० धर्मस्य भाजन मिति चिंतन रूप ,,
६१ धर्मस्य निधि सन्निभमिति चिंतन रूप ,,
६२ अस्ति जीव इति श्रद्धान रूप ,,

६३ सच जीवो नित्य इति श्रद्धान रूप ,,
६४ जीवः कर्माणि करोति इति श्रद्धान रूप ,,
६५ जीव कृत कर्माणि वेदयतीति श्रद्धान रूप ,,
६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धान रूप ,,
६७ अस्ति पुनर्मोक्षोपाय इति श्रद्धान रूप ,,

ॐ ह्रीँ णमो दंसणस्स —२० माला

श्री विनयपद नमस्कार १० ।

१ श्री अरिहंत आसातना वर्जन रूप विनय गुणाय नमः ।
२ श्री अरिहंत भक्ति प्रवण रूप ,,
३ श्री अरिहंत बहुमान प्रवण रूप ,,
४ श्री अरिहंत वचन श्रद्धान रूप ,,
५ श्री सिद्ध आसातना वर्जन रूप ,,
६ श्री सिद्ध भक्ति प्रवण रूप ,,
७ श्री सिद्ध बहुमान रूप ,,
८ श्री सिद्ध स्तुति करण तत्पर रूप ,,
९ सुविहित चन्द्रादि कुलासातन वर्जन रूप ,,
१० सुविहित चन्द्रादि कुल भक्ति प्रवण रूप ,,
११ सुविहित कुल बहुमान रूप ,,
१२ सुविहित कुल सस्तुति करण रूप ,,

१३ सुविहित कौटिकादि गण भक्ति करण रूप
१४ सुविहित कौटिकादि गण बहुमान करण रूप ,,
१५ सुविहित कौटिकादि गण सस्तुति करण रूप ,,
१६ सुविहित गण–अनासातना रूप ,,
१७ श्री संघ आसातना वर्जन रूप ,,
१८ श्री संघ भक्ति करण रूप ,,
१९ श्री संघ बहुमान करण रूप ,,
२० श्री संघ स्तुति करण रूप ,,
२१ आगमोक्त क्रिया अनासातना रूप ,,
२२ आगमोक्त क्रिया भक्ति करण रूप ,,
२३ शुद्ध क्रिया बहुमान करण रूप ,,
२४ शुद्ध क्रिया स्तुति करण रूप ,,
२५ जैन धर्म अनासातना रूप ,,
२६ जैन धर्म भक्ति करण रूप ,,
२७ जैन धर्म बहुमान करण रूप ,,
२८ जैन धर्म स्तुति करण रूप ,,
२९ ज्ञान गुण अनासातना करण रूप ,,
३० ज्ञान गुण भक्ति करण रूप ,,
३१ ज्ञान गुण बहुमान करण रूप ,,
३२ ज्ञान गुण स्तुति करण रूप ,,
३३ ज्ञानि जन अनासातना रूप ,,

३४ ज्ञानि जन भक्ति करण रूप ,,
३५ ज्ञानि जन बहुमान करण रूप ,,
३६ ज्ञानि जन स्तुति करण रूप ,,
३७ आचार्य आसातना वर्जन रूप ,,
३८ आचार्य भक्ति करण रूप ,,
३९ आचार्य बहुमान करण रूप ,,
४० आचार्य स्तुति करण रूप ,,
४१ स्थविर मुनि अनासातना रूप ,,
४२ स्थविर मुनि भक्ति करण रूप ,,
४३ स्थविर मुनि बहुमान करण रूप ,,
४४ स्थविर मुनि स्तुति करण रूप ,,
४५ उपाध्याय अनासातन रूप ,,
४६ उपाध्याय भक्ति करण रूप ,,
४७ उपाध्याय बहुमान करण रूप ,,
४८ उपाध्याय स्तुति करण रूप ,,
४९ गणावच्छेदक अनासातन रूप ,,
५० गणावच्छेदक भक्ति करण रूप ,,
५१ गणावच्छेदक बहुमान करण रूप ,,
५२ गणावच्छेदक स्तुति करण रूप ,,

ॐ ह्रीँ णमो विणय गुणस्स—२० माला



श्री चारित्रपद नमस्कार ११ ।

१ सर्वत॰ प्राणातिपात विरमण रूपाय चारित्राय नमः।
२ सर्वत मृपावाद विरमण रूपाय ,,
३ सर्वतः अदत्तादान विरमण रूपाय ,,
४ सर्वत मैथुन विरमण रूपाय ,,
५ सर्वतः परिग्रह विरमण रूपाय ,,
६ क्षमा धर्म चारित्राय नम
७ आर्जव धर्म चारित्राय नमः
८ मृदुता धर्म चारित्राय नम
९ मुक्ति धर्म ,,
१० तपो धर्म ,,
११ सयम धर्म ,,
१२ सत्य धर्म ,,
१३ शौच धर्म ,,
१४ अकिंचन धर्म ,,
१५ ब्रह्मचर्य धर्म ,,
१६ पृथ्वीकाय रक्षा सयम ,,
१७ अप्काय रक्षा सयम ,,
१८ तेउ काय रक्षा सयम ,,
१९ वाउ काय रक्षा सयम ,,
२० वनस्पती काय रक्षा सयम ,,

२१ बेइन्द्रिय रक्षा संयम ,,
२२ तेइन्द्रिय रक्षा संयम ,,
२३ चउरिन्द्रिय रक्षा संयम ,,
२४ पंचिन्द्रिय रक्षा संयम ,,
२५ अजीव रक्षा संयम ,,
२६ प्रेक्षा संयम ,,
२७ अनुप्रेक्षा संयम ,,
२८ अधिक वस्त्र भक्तादि न्यास रूप ,,
२९ प्रमार्जन रूप संयम ,,
३० मनः संयम ,,
३१ वचन संयम ,,
३२ काया संयम ,,
३३ श्री आचार्य वेयावच्च रूप ,,
३४ श्री उपाध्याय वेयावच्च ,,
३५ तपस्वी वेयावच्च ,,
३६ लघुशिष्य वेयावच्च ,,
३७ ग्लानसाधु वेयावच्च ,,
३८ साधु वेयावच्च ,,
३९ श्रमणोपासक वेयावच्च ,,
४० संघ वेयावच्च ,,
४१ कुल वेयावच्च ,,

४२ गण वेयावच ,, ,,
४३ पशुपंडगादि सहित वसति वर्जन रूपाय
४४ स्त्री हास्यादि कथा वर्जन ,,
४५ स्त्री आसन वर्जन ,,
४६ स्त्री अंगोपांग निरीक्षण वर्जन ,,
४७ कुड्यंतर स्थित स्त्री हाव भाव श्रवण वर्जन
४८ पूर्व संभोग चिंतन वर्जन ,,
४९ अति सरस आहार वर्जन ,,
५० अति आहार वर्जन ,,
५१ अंग विभूषा वर्जन ,,
५२ अनशन तपो रूप ,,
५३ ऊनोदरी तपो रूप ,,
५४ वृत्ति संक्षेप तपो रूप ,,
५५ रस त्याग तपो रूप ,,
५६ काय क्लेश तपो रूप ,,
५७ संलेखन तपो रूप ,,
५८ प्रायश्चित्त तपो रूप ,,
५९ विनय तपो रूप ,,
६० वेयावच तपो रूप ,,
६१ सज्झाय तपो रूप ,,
६२ ध्यान तपो रूप ,,

६३ कायोत्सर्ग तपो रूप ,,
६४ अनत ज्ञान युक्त ,,
६५ अनत दर्शन युक्त ,,
६६ अनत गुण रमण रूप ,,
६७ क्रोध निग्रह करण रूप ,,
६८ मान निग्रह करण रूप ,,
६९ माया निग्रह करण रूप ,,
७० लोभ निग्रह करण रूप ,,

ॐ ह्रीँ णमो चारित्तस्स—२० माला

श्री ब्रह्मचर्यपद नमस्कार १२।

१ मनसा औदारिक विषय अकरण रूप ब्रह्मचर्याय नमः।
२ मनसा औदारिक विषय अकरावण रूप
३ मनसा औदारिक विषय अनुमोदन वर्जन रूप
४ वचसा औदारिक विषय अकरण ,,
५ वचसा औदारिक विषय अकरावण ,,
६ वचसा औदारिक विषय अनुमोदन वर्जन ,,
७ कायेन औदारिक विषय अकरण ,,
८ कायेन औदारिक विषय अकरावण ,,
९ कायेन औदारिक विषय अनुमोदन वर्जन ,,

१० मनसा वैक्रिय विषय अकरण रूप ,,
११ मनसा वैक्रिय विषय अकरावण रूप ,,
१२ मनसा वैक्रिय विषय अनुमोदन वर्जन ,,
१३ वचसा वैक्रिय विषय अकरण ,, ,,
१४ वचसा वैक्रिय विषय अकरावण ,,
१५ वचसा वैक्रिय विषय अनुमोदन वर्जन ,,
१६ कायेन वैक्रिय विषय अकरण ,,
१७ कायेन वैक्रिय विषय अकरावण ,,
१८ कायेन वैक्रिय विषय अनुमोदन वर्जन ,,

ॐ ह्रीं णमो वभनयधराण—२० माला

श्री क्रियापद नमस्कार १३ ।

१ कायिकी क्रिया प्रवर्तन रहिताय नमः ।
२ अधिकरणिका क्रिया ,,
३ पारितापनिका क्रिया ,,
४ प्राणाति पाति की क्रिया ,,
५ आरम्भिका क्रिया ,,
६ परिग्रह क्रिया ,,
७ मायाप्रत्यायिका ,,
८ मिथ्या दर्शन प्रात्ययिका ,,

९ अपच्चक्खाणी ,,
१० दृष्टि क्रिया ,,
११ स्पर्शन क्रिया ,,
१२ प्रातित्य की क्रिया ,,
१३ सामंतोपनिपातनिका ,,
१४ नैशस्त्रि की ,,
१५ स्वहस्तिकी ,,
१६ आणवणी क्रिया ,,
१७ विदारणिया क्रिया ,,
१८ अनाभोग प्रत्ययिकी ,,
१९ अनवकंख प्रत्ययिकी ,,
२० आज्ञापन प्रत्ययिकी ,,
२१ प्रयोग क्रिया ,,
२२ समुदान क्रिया ,,
२३ प्रेम क्रिया ,,
२४ द्वेष क्रिया ,,
२५ इरियावहिया ,,

ॐ ह्रीँ णमो किरियाण—माला २० ।

श्रीतपपद—नमस्कार १४

१ अनशन तपोयुक्ताय नमः ।
२ ऊनोदर तपोयुक्ताय ,,
३ वृत्ति सक्षेप तपोयुक्ताय
४ रस त्याग
५ काय क्लेश ,,
६ सलीनता तपोयुक्ततायनमः ,,
७ प्रायश्चित
८ विनय ,,
९ वैयावृत्य ,,
१० सज्झाय ,,
११ ध्यान ,,
१२ कायोत्सर्ग ,,
,,

ॐ ह्रीँ णमो तवस्स—२० माला

श्री गौतमपदाराधन १५ ।

१ श्रीगौतम गणधराय नमः ।
२ श्रीअग्निभूति गणधराय नमः ।
३ श्रीवायुभूति ,, ,,

४ श्रीव्यक्तस्वामी " "
५ श्रीसुधर्मास्वामी " "
६ श्रीमण्डित स्वामी " "
७ श्रीमौर्यपुत्र स्वामी " "
८ श्रीअकम्पित स्वामी " "
९ श्रीअचलभ्राता " "
१० श्रीमेतार्य स्वामी " "
११ श्रीप्रभास स्वामी " "
१२ चौवीस तीर्थ करोंके १४५२ गणधरेभ्यो नमः।

ॐ ह्रीँ णमो गोयमाण—२० माला



श्री जिनपद नमस्कार १६।

१ श्रीसीमन्धर जिनेश्वराय नमः।
२ श्रीयुगमन्धर जिनेश्वराय नमः।
३ श्रीबाहु जिनेश्वराय नमः।
४ श्रीसुबाहु जिनेश्वराय नमः।
५ श्रीसुजात जिनेश्वराय नमः।
६ श्रीस्वय प्रभ जिनेश्वराय नमः।
७ श्रीऋषभानन " "
८ श्रीअनन्तवीर्य " "

९ श्रीसुर प्रभु ,, ,,
१० श्रीविशाल ,, ,,
११ श्रीवज्रधर ,, ,,
१२ श्रीचन्द्रानन ,, ,,
१३ श्रीचन्द्रबाहु ,, ,,
१४ श्रीभुजग स्वामी ,, ,,
१५ श्रीइश्वर स्वामी ,, ,,
१६ श्रीनेमि प्रभु ,, ,,
१७ श्रीवीर सेन प्रभु ,, ,,
१८ श्रीमहा सेन प्रभु ,, ,,
१९ श्रीदेवसेन ,, ,,
२० श्रीअजितवीर्य ,, ,,

ॐ ह्रीँ णमो जिणाण—२० माला



श्री चारित्रपद नमस्कार १७ ।

१ सर्वत. प्राणातिपात विरमणरूपाय चारित्राय नम. ।
२ सर्वत मृषावाद विरमण ,,
३ सर्वत. अदत्तादान विरमण ,,
४ सर्वतः मैथुन विरमण ,,
५ सर्वत परिग्रह विरमण ,,
६ सर्वतः रात्रीभोजन विरमण ,,

७	इर्यासमिति समिताय	"	"
८	भाषा समिति समिताय	"	"
९	एषणा समिति समिताय	"	"
१०	आयाणमंडमत्तनिक्खेवणासमिति समिताय		"
११	पारिष्ठापनिका समिति	"	"
१२	मनोगुप्ति गुप्ताय	"	"
१३	वचन गुप्ति गुप्ताय	"	"
१४	काय गुप्ति गुप्ताय	"	"
१५	मनो दण्ड विरताय	"	"
१६	वचनदण्ड विरताय	"	"
१७	कायदण्ड विरताय	"	"

ॐ ह्रीँ णमो चारित्तधराण—२० माला



श्री ज्ञानपद नमस्कार १८।

१	श्री आचारांग सूत्राय नमः	।	
२	श्री सूयगडांग	"	"
३	श्री ठाणांग	"	"
४	श्री समवायांग	"	"
५	श्री भगवती	"	"
६	श्री ज्ञाताधर्म कथा	"	"
७	श्री उपासकदशा	"	"

८ श्री अन्तगडदशा सूत्रायनमः ,, ,,
९ श्री अनुत्तरोववाइ ,, ,,
१० श्री प्रश्न व्याकरण ,, ,,
११ श्री विपाक ,, ,,
१२ श्री उववाई ,, ,,
१३ श्री रायपसेणइय ,, ,,
१४ श्री जीवा भिगम ,, ,,
१५ श्री पन्नवणा ,, ,,
१६ श्री जम्बूद्वीप पन्नत्ती ,, ,,
१७ श्री चंदपन्नत्ती ,, ,,
१८ श्री सूरपन्नत्ती ,, ,,
१९ श्री निरया वलिया ,, ,,
२० श्री पुष्पिका ,, ,,
२१ श्री पुष्पचूलिका ,, ,,
२२ श्री कल्पिका ,, ,,
२३ श्री वह्निदशा ,, ,,
२४ श्री चउसरणपयन्ना ,, ,,
२५ श्री सथारगपयन्ना ,, ,,
२६ श्री भत्तपयन्ना ,, ,,
२७ श्री चदाविजिय ,, ,,
२८ श्री मरणविभत्ति ,, ,,
,, ,,

२९ श्री गणिविज्ञा	,,	,,
३० श्री तदुलवेयालिय	,,	,,
३१ श्री देवेन्द्रस्तव	,,	,,
३२ श्री आउर पच्चक्खाण	,,	,,
३३ श्री महापचक्खाण	,,	,,
३४ श्री दशवैकालिक	,,	,,
३५ श्री उत्तराध्ययन	,,	,,
३६ श्री आवश्यक सूल	,,	,,
३७ श्री पिण्ड निर्युक्ति	,,	,,
३८ श्री व्यवहारच्छेद	,,	,,
३९ श्री निशीथ	,,	,,
४० श्री महानिशीथ	,,	,,
४१ श्री दशाश्रुतस्कध	,,	,,
४२ श्री जीतकल्प	,,	,,
४३ श्री पचकल्प	,,	,,
४४ श्री नदीचूलिका ,	,,	,,
४५ श्री अनुयोगद्वार	,,	,,

४६ स्यादस्तिभगप्ररूपकाय सूत्राय नमः ।

४७ स्यान्नास्तिभग	,,	,,
४८ स्यादस्ति नास्ति भग	,,	,,
४९ स्याद वक्तव्य भंग	,,	,,

५० स्यादस्ति अवक्तव्य भग सूत्रायनमः ,,
५१ स्यान्नास्ति अवक्तव्य भग ,, ,,
५२ स्यादस्ति नास्ति अवक्तव्य भग ,,

ॐ ह्रीँ णमो णाणस्स—२० माला

श्री श्रुतज्ञानपद नमस्कार १९।

१ पर्याय श्रुतज्ञानाय नम ।
२ पर्याय समास श्रुत
३ अक्षर श्रुत ,,
४ अक्षर समास ,,
५ पदश्रुत ,,
६ पदसमासश्रुत ,,
७ सघात श्रुत ,,
८ सघात समास श्रुत ,,
९ प्रतिपत्ति ,,
१० प्रतिपत्ति समास ,,
११ अनुयोग श्रुत ,,
१२ अनुयोग समास श्रुत ,,
१३ श्रुत ज्ञानाय नम ।
१४ श्रुतसमास ज्ञानाय नम ।

१५ बहु श्रुत ज्ञानाय ,,
१६ बहु श्रुत समास ,,
१७ पाहुड श्रुत ,,
१८ पाहुड समास श्रुत ,,
१९ पूर्व श्रुत ,,
२० पूर्व समास श्रुत ,,

ॐ ह्रीँ णमो सुयस्स २० माला।

श्री तीर्थपद् नमस्कार २०

१ सर्वतः प्रणातिपातविरताय श्रीतीर्थाय नमः।
२ सर्वतः मृषावाद विरताय नमः।
३ सर्वतः अदत्तादान ,,
४ सर्वतः मैथुन ,,
५ सर्वतः परिग्रह ,,
६ पृथ्वीकाय रक्षकाय ,,
७ अप्काय रक्षकाय ,,
८ तेजस्काय रक्षकाय ,,
९ वायु काय रक्षकाय ,,
१० वनस्पतिकाय रक्षकाय ,,
११ त्रसकाय रक्षकाय ,,

१२ क्रोधरहिताय
१३ मानरहिताय ,,
१४ मायारहिताय ,,
१५ लोभ रहिताय ,,
१६ रागांश विरताय ,,
१७ द्वेषांश विरताय ,,
१८ लज्जागुण युक्ताय ,,
१९ दया गुण युक्ताय ,,
२० माध्यस्थ्य गुण ,,
२१ सौम्य गुण ,,
२२ गुणानुराग गुण ,,
२३ अक्षुद्र गुण ,,
२४ संघ प्रभावना गुण ,,
२५ उपास्यगुण ,,
२६ लोकविरुद्ध वर्जन गुण ,,
२७ अक्रूर गुण ,,
२८ पाप भिरु गुण ,,
२९ परानचक विश्वसनीय गुण ,,
३० दाक्षिण्य गुण ,,
३१ अशुभ कथा वर्जन गुण ,,
३२ अनुकूल धार्मिक परिवार युक्ताय ,,
३३ दीर्घ दर्शीगुण ,,

३४ सत्संगति गुण ,,
३५ श्रुद्धानुगुतगुण ,,
३६ रत्नत्रयी शुद्धाय ,,
३७ परहित कारण गुण ,,
३८ लब्ध लक्ष्य गुण ,,

ॐ ह्रीं णमो तित्थस्स—२० माला

